चकमक

अगस्त, 1996

बाल विज्ञान पत्रिका

रु. 5.00

निधि जायसवाल, छठवीं, भोपाल, म.प्र.

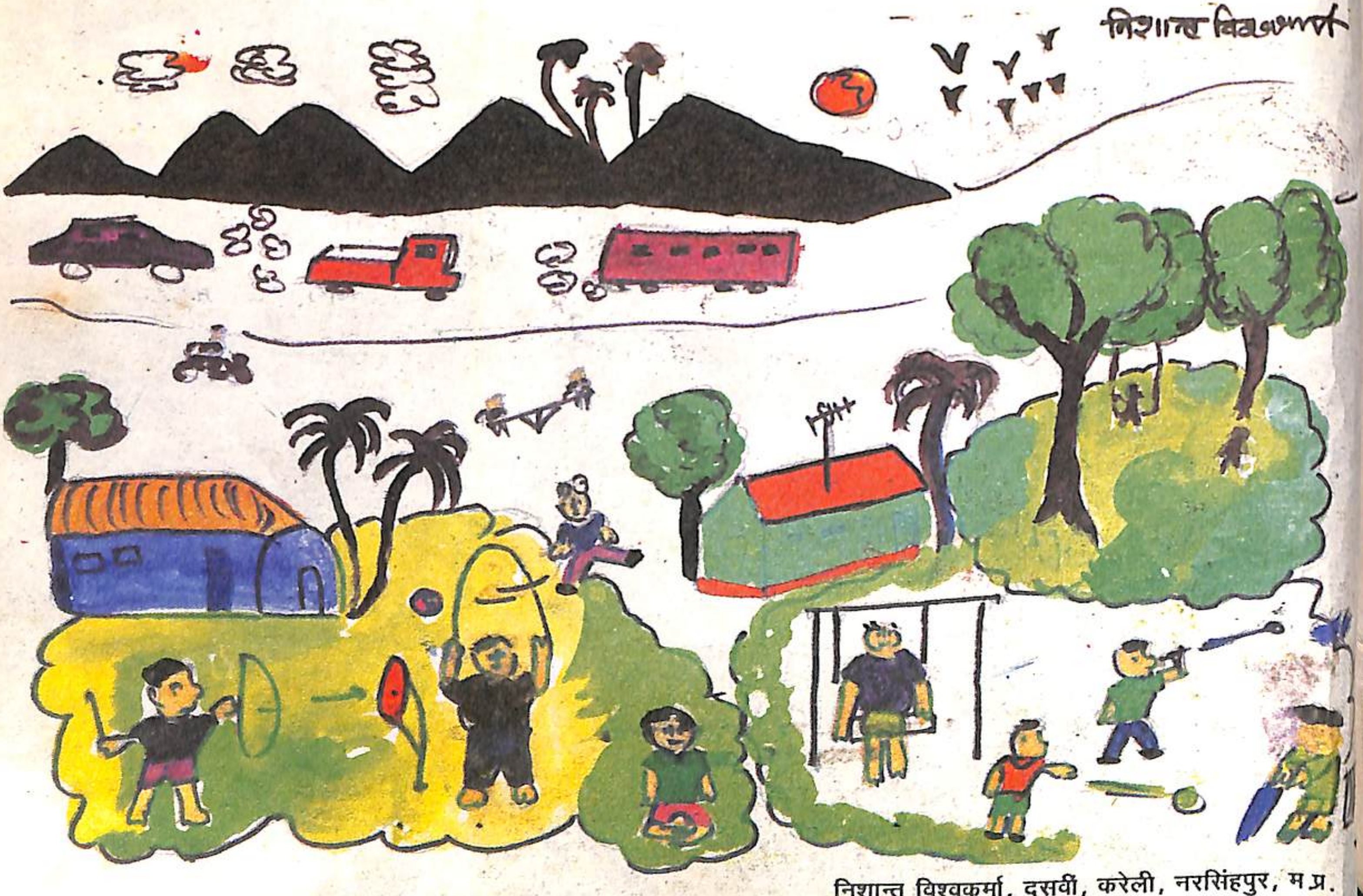

निशान्त विश्वकर्मा, दसवीं, करेली, नरसिंहपुर, म.प्र.

शाना, पाँच वर्ष, चंडीगढ़

चकमक

मासिक बाल विज्ञान पत्रिका

वर्ष-12 अंक 2 अगस्त, 1996

संपादक

विनोद रायना

सह-संपादक

राजेश उत्साही

कविता सुरेश

संपादन सहयोग

दुलदुल विश्वास

कला-सज्जा

जया विवेक

उत्पादन/वितरण

कमलसिंह, मनोज निगम

चकमक का चंदा

एक प्रति : पाँच रुपए

छमाही : पच्चीस रुपए

वार्षिक : पचास रुपए

डाक खर्च मुफ़्त

चंदा, मनीआर्डर या बैंक ड्राफ़्ट से एकलव्य के नाम पर भेजें। कृपया चेक न भेजें।

काग़ज़ : यूनिसेफ़ के सौजन्य से।

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता

एकलव्य,

ई-1/25,

अरेरा कॉलोनी,

भोपाल-462016

(म. प्र.)

फोन : 563380

132वें अंक में.....

विशेष

17 ❑ बारिश हुई रूम-झुम उग आए मशरूम

कविताएँ

6 ❑ बूँदें

30 ❑ कविता

40 ❑ एक पहेली

धारावाहिक

33 ❑ क़िस्सा-बुरातीनो का : 3

हर बार की तरह

2 ❑ मेरा पन्ना

15 ❑ हमारे वृक्ष -52 : बहेड़ा

38 ❑ माथापच्ची

और यह भी

8 ❑ चकमक समाचार

9 ❑ दिवास्वप्न

27 ❑ खेल काग़ज़ का : हिरण

31 ❑ श्रद्धांजलि

आवरण परिचय

लम्बी-लम्बी घास से भरे मैदानों में घने झुण्डों में उगने वाला मशरूम।

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यवसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

मेरापन्ना

पिल्ले

हमारे घर के पिछवाड़े एक कुतिया ने चार पिल्लों को जन्म दिया। पिल्ले मुझे बहुत प्रिय थे। एक दिन कड़ाके की सर्दी थी। रात के नौ बजे थे। मैंने पिल्लों की कूर - कूर की आवाज़ें सुनी। प्रकाश लेकर मैं आवाज़ की तरफ़ गई। पिल्ले ठण्ड से काँप रहे थे। मैंने पिल्लों को उठाकर टोकनी में रखा। और घर लाकर टोकनी एक मोटे कपड़े से ढाँक दी। अब पिल्लों की आवाज़ें बन्द हुईं। मैं बहुत ख़ुश थी। सोच रही थी, मेरे समान पिल्लों को भी ठण्ड लगती होगी।

● मधु पटेल, आमडीह, शहडोल, म. प्र.

● घनश्याम पाटीदार, छठवीं, अमलेटा

नदी की कहानी

यह नदी बहुत ही सुन्दर है। इस नदी में हर दीपावली को बैल–गाय आदि को नहलाया जाता है। इस नदी का नाम गंजाल नदी है। इसी प्रकार हमारे गाँव का नाम भादूगाँव (गंजाल) पड़ा है। इस नदी में कुछ लोग कपड़े धोते हैं तो कुछ मछलियाँ पकड़ते हैं। दूर–दूर के लोग यहाँ से रेत और पत्थर ले जाते हैं। हम इस नदी में नहाते भी हैं। इस नदी के घाटों के नाम हैं बाज़ार घाट, नाव घाट, गाड़ा घाट। गाड़ा घाट पर बैल–गाय, बैलगाड़ी और चार पहिए के वाहन निकल सकते हैं। कुछ दूर जाते ही इसका नाम कीर घाट पड़ गया। वर्षा ऋतु में यह पूर आ जाती है। माझी हमें एक घाट से दूसरे घाट तक पहुँचाता है।

● मनोहरलाल बाँके, भादूगाँव, टिमरनी, होशंगाबाद, म. प्र.

● नैना खाँ, बिठूर, राजगढ़, अजमेर, राजस्थान

● दिपेन्द्र सोलंकी, ग्यारह वर्ष, भादूगाँव, होशंगाबाद, म. प्र.

● अंजलिना परमार, छठवीं, कोदनिया, महु, म. प्र.

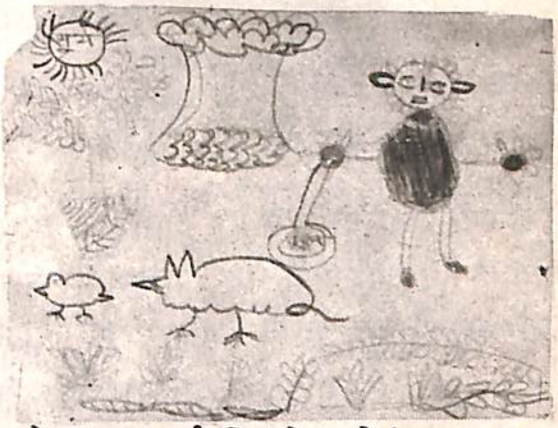

● प्रशान्त गौर, ग्यारह वर्ष, हिरनखेड़ा, होशंगाबाद, म. प्र.

● राम कृष्ण भिलाला, होशंगाबाद, म. प्र.

● राजश्री, टिमरनी, होशंगाबाद, म. प्र.

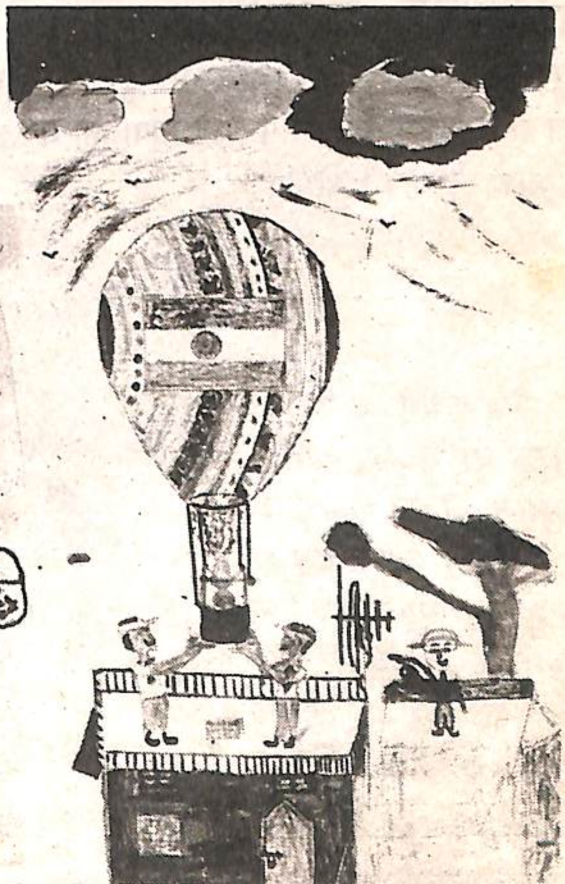

● तारिक सिद्दिकी, आठवीं, मनेन्द्रगढ़, सरगुजा, म. प्र.

● मुकेश वर्मा, छठवीं, बंदी मुहाड़िया, खिड़किया, होशंगाबाद

दोस्त

मेरा एक पक्का दोस्त है हम दोनों एक साथ एक स्कूल में पढ़ते हैं। उसका नाम प्रकाश है। वह मेरे घर आता है। मैं और मेरा भाई, प्रकाश के साथ शतरंज खेलते हैं। प्रकाश शतरंज का माहिर खिलाड़ी है। प्रायः हम इतवार के दिन दोपहर को मिलते हैं। दोपहर को शतरंज और शाम को क्रिकेट खेलते हैं।

एक बार मेरा एक पेन जो चाचा जी ने मुझे दिया था, वह गुम हो गया। स्कूल तो मैं उसे ले नहीं गया था। मेरा शक प्रकाश पर गया। मैंने उससे कहा कि, "तुमने मेरे साथ धोखा किया है। तुमने मेरा पेन चुराया है क्योंकि तुम ही मेरे घर कल आए थे।" वह रोने लगा और उसने कहा , "मैंने पेन नहीं चुराया।" पर मुझे विश्वास नहीं हुआ, मैं स्कूल से घर आया और मम्मी को जब पेन के बारे में बताया तो मम्मी बोलीं कि वो पेन तो पापा जी दफ़्तर ले गए हैं। मुझे अपने बर्ताव पर बहुत पछतावा हुआ। मैंने प्रकाश से माफ़ी माँगी।

● निशान्त विश्वकर्मा, दसवीं, करेली, नरसिंहपुर, म. प्र.

चिड़िया

रोज़ सबेरे उठती चिड़िया
पेड़ों पर बैठकर गाती गाना
शाम को वह करती बसेरा
दिनभर खाती वह दाना
चिड़िया रानी भोली-भाली
कभी न देती किसी को गाली
यह बड़ी है मतवाली
फुदकती है यह डाली-डाली

कविता और चित्र ● मुक्तेश मालवी, छठवीं, टिमरनी, होशंगाबाद, म.प्र.

चिड़िया - चिड़िया
पानी में बैठी चिड़िया
डोल डोलती चिड़िया रानी
दाना खाती चिड़िया रानी
चीं-चीं करती चिड़िया रानी
डाल-डाल पर बैठी चिड़िया
चिड़िया रहती साथ-साथ
घर बनाती साथ-साथ

● मालविका पुराणिक, दूसरी, भावनगर, गुजरात

मेरी बाज़ार यात्रा

मैं अपने दोस्तों के साथ अपने गाँव के पास दूसरे शहर पनागर गया। यह शनिवार का दिन था। और वहाँ शनिवार को ख़ूब बाज़ार भरता है। हमने जाकर देखा कि एक तरफ केवल सब्ज़ियाँ बिक रहीं थी। वहाँ हमारे मतलब की कोई वस्तु नहीं थी। फिर हम दूसरी तरफ गए, यहाँ पर लोहे का सामान बिक रहा था। इनसे भी हमें कोई लेना-देना नहीं था। तब हमने मुख्य सड़क की ओर कदम बढ़ाया। यह सड़क मिर्ज़ापुर की ओर जाती थी। सड़क के किनारे दोनों ओर बहुत-सी दुकानें लगी हुईं थी। यहाँ हमें अपने मनपसंद सामान के दर्शन हो गए। मुझे पुस्तकों से अनंत प्रेम है, अतः मैंने दो-तीन पुस्तकें ख़रीदी। हमारी मित्र मंडली में मिठाइयाँ, फल, खिलौने आदि-आदि लेना प्रारंभ किया।

अब हमने सब कुछ देख-सुनकर घर की ओर कदम बढ़ाए। अभी कुछ ही दूर गए थे कि अचानक देखा कि एक जगह सड़क के बीचोंबीच भीड़ लगी हुई है। भीड़ के दोनों ओर गाड़ियाँ आकर रुकने लगीं और वे हार्न बजा-बजाकर हटने का संकेत दे रहे थे। हमने भीड़ में घुसकर देखा कि एक साइकिल सड़क में टूटी अवस्था में पड़ी हुई थी। तथा उसके पास दो लड़के पड़े हुए थे। दोनों बुरी अवस्था में थे। दोनों के शरीर से ख़ून गिर रहा था तथा एक बेहोश होकर पड़ा था। हमारे तो यह देखकर होश ही उड़ गए। हमें समझते देर नहीं लगी कि उनका एक्सीडेंट हुआ है। अब हम सीधे घर की ओर रवाना हुए। जब शहर पार हो गया और हमारे गाँव के हरे भरे खेत दिखाई देने लगे तब हमने सोचा, सच गाँव और शहर में कितना अन्तर है। गाँव में कितनी शांति है और शहर में कितना शोर, भय, कष्ट होता है।

● सुनील कुमार बैरागी, नवमीं, पनागर, जबलपुर, म. प्र.

● साकिर खाँ, छठवीं, मानकुण्ड, देवास, म. प्र.

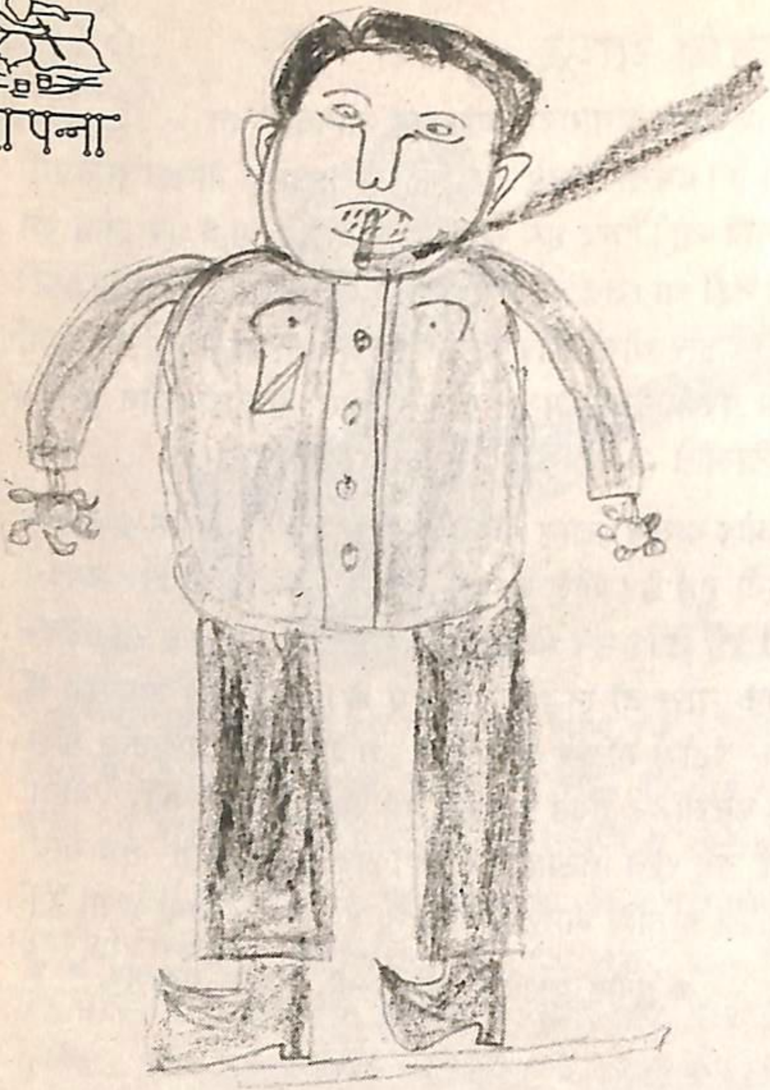

● बृजभान कुशवाह, सातवीं, बसई, दतिया, म. प्र.

कैन्सर

कैन्सर बीमारी है लाइलाज
हर किसी को मारने से आती नहीं बाज़।
कम पिया करो बीड़ी-सिगरेट
कई जने इसको पीकर हो चुके हैं अचेत।
सिगरेट पीता है पूरा संसार
जो एक बार पी ले वह पीता है बार-बार।
क्यों पीते हैं सिगरेट ये लोग
जबकि ये जानते हैं इसको पीने से
होता है भयानक रोग।
जो भी इसको पीता है
वह कुछ महीनों के लिए ही जीता है।
फिर उसका जीना हो जाता हराम
ऐसे समय उसको याद आता राम-राम।
बड़ी ख़तरनाक चीज़ है कैन्सर
जो इसका रोगी होता है उसे
डुबो ले जाती है अपने साथ
कैन्सर की ज़हर भरी लहर।

● संदीप राजपुरोहित, छठवीं,
फालना, पाली, राजस्थान

नहर में नहाया

मेरे घर के पीछे एक नहर है। उसमें बहुत से बच्चे नहाते हैं। एक दिन मैंने देखा मेरी सहेली रेखा नहर में नहा रही है। मैं सोचने लगी मैं भी क्यों न जाऊँ और उसके साथ नहाऊँ। मैं मम्मी-पापा की नज़र से बचते हुए नहर पर भाग गई। मैं उसके साथ नहाने लगी। तभी कुछ समय बाद मेरे पापा डण्डी लेकर नहर पर पहुँच गए। पापा ने मुझे डाँटा। 'मैंने तुम्हें नहर में नहाने को मना किया था न फिर तुमने नहर में क्यों नहाया।' मैं चुपचाप पानी से निकलकर घर आ गई। पापा ने घर पर आकर मुझे बहुत मारा, मैं ख़ूब रोई। उसके बाद मैं कभी नहर पर नहाने नहीं गई।

● अनीता बौरासी, छिंदगाँव,
होशंगाबाद, म. प्र.

छोटू

मैं छोटू दिखता नहीं मोटू
स्कूल में मुझे कहते नमन।
कभी घूमता मैं शहर में
तो कभी जाता चमन चमन।
ऊटपटाँग हरकत मैं करता
नहीं बैठता सीधा जी।
मम्मी पापा डाँट लगाते
रोता भर भर दीदा जी।
सब्ज़ी रोटी मुझे न भाती
बिस्कुट विस्कुट खाता हूँ।
ज़बान मेरी बड़ी चटोरी
दूध मलाई उड़ाता हूँ।

● नमन ताम्रकार, इन्दौर, म. प्र.

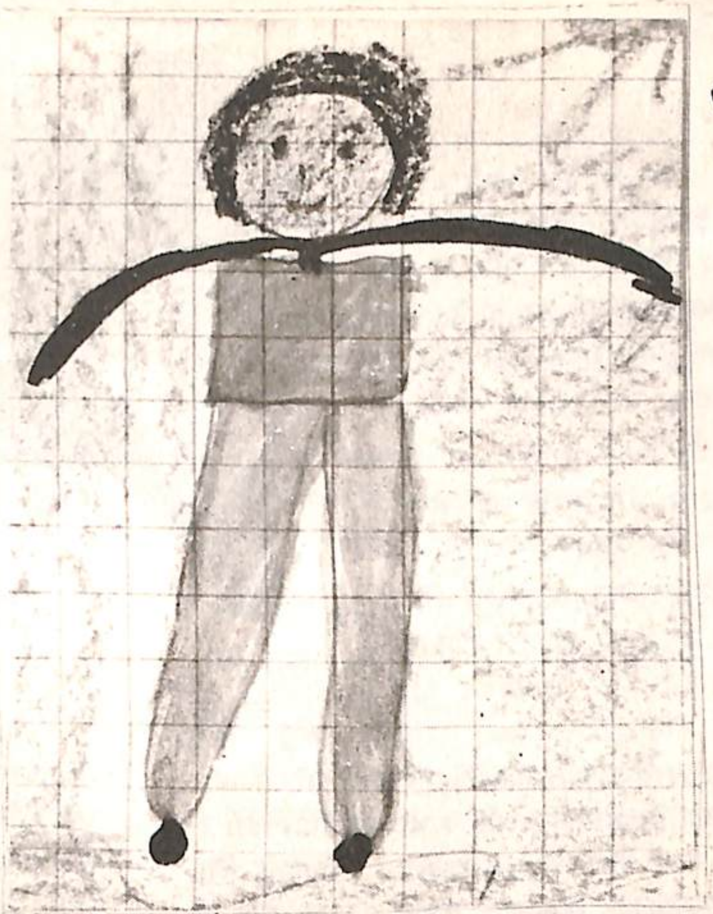

● मोनिका कोटवानी, तीसरी, भोपाल, म.प्र.

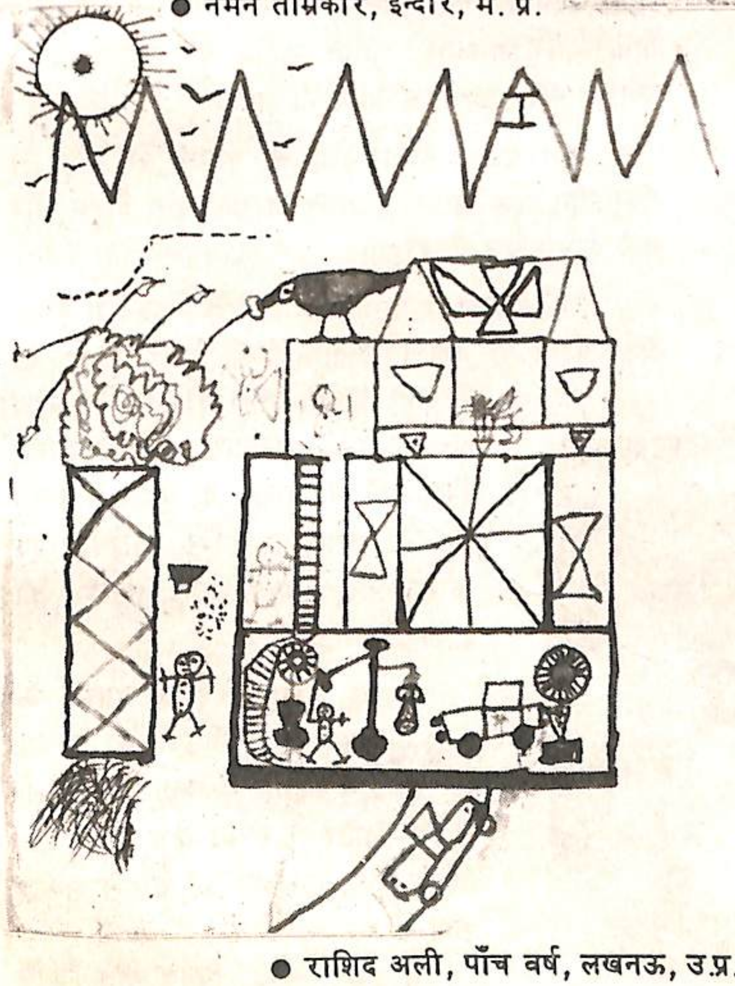

● राशिद अली, पाँच वर्ष, लखनऊ, उ.प्र.

अपना घर

मम्मी पापा के बच्चे चार,
घर से निकले गाड़ी पर सवार।
पूर्व से पश्चिम को जाएँ,
उत्तर से दक्षिण को जाएँ।
घूमघाम कर जब घर को आएँ,
मम्मी को सब बात बताएँ।
देख लिया है हमने जग सारा,
अपना घर है सबसे न्यारा।

● चेतन सिंह, छठवीं, पटियाला, पंजाब

देवास में बाल गतिविधि शिविर

छुट्टियों में नाच-गाना, उछल-कूद किसे अच्छी नहीं लगती? और ये सब तब और मज़ेदार बन जाता है, जब नाच-गाने के साथ-साथ खेल खेल में कुछ मनपसन्द चीज़ें देखने, करने व सीखने को मिले।

एकलव्य देवास में 3 से 5 जून, 96 तक तीन दिवसीय बाल गतिविधि शिविर का आयोजन किया गया। इसमें देवास के अलावा टोंकखुर्द एवं जनोइखेड़ी के तक़रीबन 40 बच्चों ने तीन दिन तक लगातार कई सारी मनोरंजक/मनपसन्द गतिविधियाँ आपस में सीखीं और सिखाईं। शिक्षा के क्षेत्र में बच्चों के बीच मज़ेदार ढंग से गतिविधियाँ करने तथा शिक्षा को रोचक बनाने के लिए वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने में एकलव्य की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

शिविर में विभिन्न शैक्षणिक गतिविधियों का प्रशिक्षण दिया गया। जैसे गणित की मूल अवधारणाओं को समझने हेतु कम लागत के विज्ञान प्रयोग सिखाए गए। कुछ मज़ेदार प्रयोग जैसे रंगों का मेला (जिलेटिन पेपर के प्राथमिक रंगों के संयोजन से अलग-अलग रंगों का निर्माण करना) तथा जादुई आग लगाना (साबुत नारियल की जटाओं में सोडियम का टुकड़ा रखकर उस पर पानी छिड़ककर आग उत्पन्न करना) .. आदि।

अन्य गतिविधियों में गणित की पहेलियों से माथापच्ची, माचिस की तीलियों से विभिन्न प्रकार की ज्यामितीय आकृतियाँ बनाना; हस्तकौशल को बढ़ावा देने वाली ऑरीगैमी, शब्दों से कहानी-कविता बनाना; गीत, अभिनय गीत, मैदानी खेल, शरीर के आंतरिक अंगों की जानकारी मानव शरीर के मॉडल द्वारा; परिचय खेल; प्रश्नमंच आदि भी थे।

इस प्रकार गतिविधियों के माध्यम से बच्चों ने तीन दिन तक लगातार अपना उत्साहवर्द्धन किया और कई सारे दोस्त भी बनाए।

अंतिम दिन आगामी कार्यक्रमों की रूपरेखा बनाई गई। बच्चों ने अपना विज्ञान किट तैयार करने का निश्चय किया। साथ ही स्थानीय स्तर पर अपने आसपास के मोहल्ले, विद्यालयों में जुलाई के पहले पखवाड़े में इसी तरह के शिविर, बालमेले एवं कार्यशालाएँ आयोजित करने की योजना बनाई।

सभी बच्चों ने 'हम भारत के बच्चे गुरुजन .... ' गीत गाकर शिविर का समापन किया। यूँ कहा जा सकता है कि शिविर में समय कम ज़रूर था, किन्तु कुल मिलाकर यह प्रयास सफल रहा।

रपट : दिनेश पटेल, देवास

दिवास्वप्न

❑ गिजुभाई

गिजुभाई का नाम चकमक के पाठकों के लिए नया नहीं है। बच्चों की शिक्षा को लेकर लिखी गई किताबों में 'दिवास्वप्न' उनकी सबसे प्रसिद्ध पुस्तक है। दिवास्वप्न का शाब्दिक अर्थ है- व्यर्थ कल्पना। लेकिन इस पुस्तक में गिजुभाई ने गतिविधि आधारित ऐसी शिक्षा का सपना देखा जिसकी ज़रूरत आज हम सब महसूस करते हैं।

दिवास्वप्न के बारे में स्वयं गिजुभाई ने लिखा है, 'मुझसे किसी ने कहा भारी-भरकम लेखों के बदले यदि कथा-शैली में शिक्षा-सम्बंधी अपने विचारों को संजोऊँ तो कैसा हो? फलस्वरूप यह दिवास्वप्न रचा गया। दिवास्वप्नों के मूल में वास्तविक अनुभव हों तो वे झूठे नहीं होते। यह दिवास्वप्न मेरे अनुभवों में से उपजा है।'

प्रस्तुत है इसी दिवास्वप्न का एक अंश। इसमें स्कूल में होने वाले एक समारोह का वर्णन है। आज हमारे स्कूलों में होने वाले समारोहों की तुलना इस वर्णन से करके देखा जा सकता है कि वास्तव में क्या होना चाहिए।

प्रति वर्ष की प्रथा के अनुसार इस वर्ष भी हमारी पाठशाला ने बहुत पहले से तैयारियाँ शुरू कर दी थीं। डायरेक्टर महोदय पधारने वाले थे। वह जब भी आते, पाठशाला में अवश्य पधारते। पाठशाला की तरफ़ से उस दिन एक जलसा किया जाता और छात्रगण उसमें श्लोक बोलते, कविताएँ गाते, कवायद करते और फिर साहब अच्छा काम करने वाले छात्रों को इनाम देते। दूसरे छात्रों को भी कुछ-न-कुछ दिया जाता था। उस दिन सारी पाठशाला में मिठाई भी बँटती थी।

सब कक्षाओं के विद्यार्थियों को इकट्ठा करके हमारे प्रधानाध्यापक ऐसे छात्रों को चुन रहे थे जो उनकी राय में अच्छे गाने वाले, अच्छे बोलने वाले और अच्छी तहज़ीब वाले थे। मेरे नाम भी इसी आशय की एक सूचना आई थी। लेकिन मेरी कक्षा के लड़के चुनाव में उपस्थित नहीं थे। प्रधानाध्यापक जी ने मुझसे इसका कारण पूछा तो मैंने जवाब में कहा, 'जी, मेरी कक्षा के लड़के इस काम में भाग नहीं ले सकेंगे।'

'क्यों?'

'यह सब तो सिर्फ़ डायरेक्टर महोदय को खुश करने और उनसे प्रशंसा पाने के लिए ही किया जा रहा है न?'

'हाँ, यह तो हमारी पुरानी प्रथा है और हमारे अधिकारी महोदय की भी यही इच्छा है।'

'जी हाँ, होगी। लेकिन मेरा मन इसे स्वीकार नहीं करता। मैं इसमें भाग नहीं लूँगा। मेरी कक्षा के लड़के भी नहीं आएँगे।'

'ऐसी स्थिति में मुझे साहब को इसकी सूचना देनी होगी कि आप मेरे साथ सहयोग नहीं करते और मेरे काम में बाधा डालते हैं!'

'जी, आप अवश्य ही उन्हें लिखिए। मैं उन्हें समझाने की चेष्टा करूँगा।'

'अच्छी बात है, ऐसा ही होगा।'

उसी जोश और घबराहट में प्रधानाध्यापक जी ने साहब के पास मेरी शिकायत लिख भेजी।

जलसे के लिए पाठशाला के दूसरे लड़कों का चुनाव हुआ। श्यामसुन्दर और भीमाशंकर संस्कृत में श्लोक बोलने के लिए, देवीसिंह और खेमचन्द कविता गाने के लिए, चम्पक और रमणीक, नेमीचन्द और सरजनलाल संवादों के लिए और बाक़ी के ऊँचे-पूरे, मोटे-ताज़े और हट्टे-कट्टे दस-पन्द्रह कवायद के लिए चुने गए।

मैं मन-ही-मन काँप उठा। सोचा, शाबाश है प्रधानाध्यापक को और शाबाश है इस शाला व शिक्षा की वर्तमान रीति-नीति को! .... इनमें से हर एक छात्र ऐसा चुना गया है, जिसका अपने विषय से कोई सरोकर नहीं है। श्यामसुन्दर और भीमाशंकर के कण्ठ कुछ सुरीले हैं, ब्राह्मण के

लड़के हैं, घर में संस्कृत का वातावरण है, बस इसीलिए वे पसन्द किए गए हैं। लेकिन उन बेचारों को लाख रटने पर भी कुछ याद नहीं रहता। श्लोक रट-रटकर उनका दम निकल जाएगा। पर इस परिस्थिति में और हो ही क्या सकता है! मैं मन-ही-मन दुःखी होता हुआ घर गया। खाना खा ही रहा था कि इतने में बड़े साहब की चिट्ठी मिली, 'कार्यालय में आकर मुझसे मिलिए, थोड़ा काम है।' मैं जानता था कि क्या काम है। भगवान का नाम लेकर मैं साहब के कार्यालय में पहुँचा। मैंने देखा कि उनके मुँह पर गुस्सा था। मारे गुस्से के चेहरा तमतमाया हुआ था, भौंहें चढ़ी हुई थीं। होंठ कुछ-कुछ हिल रहे थे। बड़े ही नाराज़ दिखाई पड़ते थे। मुझे देखकर कहा, 'बैठो', और फिर बोले, 'तुम्हारी कक्षा के लड़के जलसे के कार्यक्रम में क्यों न भाग लेंगे? उनमें कुछ लड़के तो सुन्दर और होशियार हैं।'

मैं मन में शान्त था, किन्तु दिमाग़ मेरा भी गरम था। मैंने जवाब में कहा, 'तो क्या सुन्दर और होशियार लड़के दूसरों का मनोरंजन करने के लिए हैं? दूसरों के सामने नाच-कूदकर पाठशाला के लिए झूठी प्रशंसा प्राप्त करने को हैं?'

मेरा यह तेज़ जवाब सुनकर साहब कुछ शान्त हुए और बोले, 'भई, हमारे लिए जलसा कोई नई बात नहीं है। वर्षों से यह रिवाज़ चला आ रहा है। जब डायरेक्टर आते हैं, तब ऐसा होता ही है।'

'क्षमा कीजिएगा साहब,' मैंने भी ज़रा नरम होकर कहा, 'रिवाज़ चाहे जो रहा हो, मेरी राय में वह ठीक नहीं है। हमें उसे तोड़ना चाहिए। यह तो सरासर ढोंग और दिखावा है, और डायरेक्टर साहब को भी धोखा देना है।'

'धोखा? कैसा धोखा?'

'जी, जो कुछ हम उन्हें दिखाएँगे, वह सब छात्रों को मार-मारकर और रटा-रटाकर ही तो तैयार किया जाएगा न? हमारी पढ़ाई का वह सच्चा और स्वाभाविक परिणाम तो होगा नहीं। कई दिनों तक रिहर्सल चलेगी, ज़ोरों की रटाई होगी, तब

कहीं लड़के तोतों की तरह उसे पढ़ेंगे और सो भी पीछे से मदद मिलने पर! इसमें लड़कों का समय और शक्ति दोनों नष्ट होंगे। उनकी पढ़ाई पिछड़ेगी। जिन छात्रों को जिस काम के लिए आज चुना गया है, वे उसके योग्य नहीं हैं। उन्हें तो मार-मारकर ही हकीम बनाना पड़ेगा। लेकिन इसमें विश्वासघात यह है कि हम साहब पर यह असर डालना चाहते हैं कि हमारे लड़के होशियार हैं, हमारी पाठशाला सुन्दर है, हमारा काम नमूनेदार है। पर असल में हम क्या हैं और क्या नहीं, सो हम अच्छी तरह जानते हैं।'

साहब कुछ देर के लिए चुप रहे। बैठे विचार करने लगे। मैंने और कहा, 'जी हम लोग तो ढोंग करते ही हैं, अपने लड़कों को भी हम उसी रास्ते ले जा रहे हैं। हमारे साहब भी हमसे खुश होने का अभिनय करेंगे और इनाम देते समय कहेंगे, 'इन छात्रों ने जिस बुद्धिमानी, योग्यता और अभिरुचि का परिचय दिया है, उससे मैं बहुत खुश हुआ हूँ। सचमुच इनमें से कुछ छात्र तो इस बात का विश्वास दिलाते हैं कि आगे चलकर ये अच्छे विद्वान, उत्तम नागरिक और सच्चे मनुष्य बनेंगे। इनको उत्साहित करने के लिए कुछ पुरस्कार रखे गए हैं। मैं इस योजना का हृदय से स्वागत करता हूँ। आज इन छात्रों को ये पुरस्कार देते हुए मुझे बहुत आनन्द हो रहा है।' क्या ये बातें उनके हृदय से निकलेंगी? क्या वे नहीं जानते कि यह सारा कार्यक्रम केवल उनकी खुशामद के लिए है? इन इनाम पाने वाले लड़कों से रटाया न जाए, विशेष परिश्रम के साथ इन्हें तैयार न किया जाए तो वैसे ये कैसे विद्वान, नागरिक और मनुष्य हैं, सो तो आप, हम और इनके माँ-बाप सभी भली-भाँति जानते हैं।'

साहब ने कहा, 'भई, तुम पढ़े तो हो, लेकिन गुढ़े नहीं हो। व्यवहार की बातों में अभी तुम बड़े कच्चे हो। तुम्हारे लिए तो सभी बातें सिद्धांत के अनुसार होनी चाहिए। लेकिन हमें तो सभी तरफ़ देखना पड़ता है।'

मैंने कहा, 'जी, सच है। फिर भी मैं इसमें भाग नहीं ले सकूँगा। मुझसे यह धाँधली सहन नहीं होगी।' 'मेरी कक्षा को आप इस प्रपंच से मुक्त रखिए।'

'लेकिन इससे तो बड़ी कठिनाई पैदा होगी। भला दूसरे शिक्षक और अधिकारी मुझे क्या कहेंगे? और मेरी कठिनाइयाँ कितनी बढ़ जाएँगी? भई मुझे तो यह आशा थी कि तुम्हारी कक्षा के लड़कों को देखकर साहब अधिक प्रसन्न होंगे। पर तुम तो ....!'

मैंने कहा, 'जी आप मुझे इससे तो मुक्त ही रखिए। मैं डायरेक्टर महोदय के मनोरंजन के लिए कुछ करूँगा। मैं ऐसा कुछ प्रबन्ध करूँगा कि जिससे लड़कों का समय भी बरबाद न हो, शक्ति का अपव्यय भी न हो, और उन्हें ढोंग और दिखावा भी न करना पड़े। आप उन्हें मेरी कक्षा में लाइएगा। मुझे विश्वास है कि मेरे कार्यक्रम से आप और वे दोनों प्रसन्न होंगे।'

वे कुछ देर तक सोचते रहे, फिर मुस्कराए और मुझसे बोले, 'अच्छा, तुम एक काम करो। मैं तुम्हारे प्रधानाध्यापक के नाम एक पत्र लिखे देता हूँ। वे तुम्हें इस काम से मुक्त रखेंगे। लेकिन देखो, तुम उन्हें चिढ़ाना नहीं। वे बेचारे पुराने ख्याल के आदमी हैं और तुम हो उमंग भरे नौजवान। मुझे तो दोनों को सँभालना है। और तुम तो जानते ही हो, यह काम कितना कठिन है।'

मैंने मन-ही-मन साहब की प्रशंसा करते हुए कहा, 'अच्छा साहब, तो अब आज्ञा हो।'

• • • • •

पाठशाला में आज पूर्ण उत्साह के साथ तैयारियाँ चल रही थीं। साहब पधारेंगे! डायरेक्टर साहब पधारेंगे!

बड़े और छोटे अफसर, गाँव के नागरिक और जनता, विद्यार्थी और शिक्षक सभी आ चुके थे। मेरे साथी शिक्षकों की अजीब हालत थी। दिल धड़क रहे थे, चेहरों पर उदासी थी, फिर भी तनकर खड़े रहने की कोशिश कर रहे थे, और अपने काम में लगे हुए थे। प्रधानाध्यापक जी ने हमारी पाठशाला के ऊधमी लड़कों को एक ओर बुलाया और उन्हें

धमकाते हुए कहा, 'देखो, हरामखोरो! ज़रा भी ऊधम किया या गड़बड़ मचाई तो कल बुरी तरह धुन दूँगा, समझे!'

तालियों की गड़गड़ाहट और संगीत के साथ डायरेक्टर साहब पधारे! प्रधानाध्यापक ने पाठशाला का वार्षिक विवरण बड़ी छटा से और बुलन्द आवाज़ के साथ इस तरह पढ़कर सुनाया, मानो लोगों को यह विश्वास दिला रहे हों कि वे काँप नहीं रहे हैं! इसीलिए वे बार-बार तनकर पढ़ते थे। पर विवरण समाप्त होने से पहले ही अन्दर से उनका कुर्ता प्रायः भीग चुका था और उनकी आवाज़ में खरखरापन आ चुका था। विवरण वाचन के बाद 'रेसीटेशन्स' अर्थात् कविता-पाठ और संवाद शुरू हुए। लड़के ग्रामोफ़ोन-रिकार्ड की तरह कविता पढ़ने लगे। उनके मुँह पर किसी भी प्रकार के कोई हाव-भाव नहीं थे। वे ज़ोर से और हाथ-पैर हिलाकर बोलते थे। दुःख केवल इतना ही था कि जो कविताएँ पसन्द की ग़ई थीं, वे सुन्दर, सरस और अच्छे कवियों की होते हुए भी इतनी कठिन थीं कि छात्र उन्हें समझ नहीं सकते थे। बेचारे बिना समझे पढ़ते थे, पढ़कर अभिनय करते थे और अपनी 'रसिकता' का परिचय देते थे। यही हाल संवादों का था। संवाद तो उपदेशपूर्ण ही होते हैं। जो उपदेश बड़ों के मुँह से शोभा देते, वे ही बालकों के मुँह से लज्जा का कारण बन रहे थे। उपदेशों का यह प्रहसन बहुत ही बेहूदा था। अकेला मैं ही नहीं, स्वयं डायरेक्टर साहब भी इसे अनुभव कर रहे थे। इसी कारण वे मूँछों में हँस भी रहे थे। मेरे साथी शिक्षक तटस्थ होकर इसे देखने का प्रयत्न करते तो वे भी ऐसा ही प्रतीत करते।

सम्मेलन समाप्त हुआ। साहब ने आभार प्रकट किया। अपना हर्ष प्रकट किया। इनाम बाँटे गए। प्रधानाध्यापक, बड़े अधिकारी और दूसरे सब आज के इस कार्य से सन्तुष्ट दिखते थे। साहब ने शिष्टाचार के रूप में कहा, 'आपकी पाठशाला का काम देखकर मुझे संतोष हुआ है।'

इतने में हमारे साहब ने बड़े साहब से विनती की, 'चौथी कक्षा के ये शिक्षक आपको कुछ काम दिखाना चाहते हैं। उस परदे की आड़ में इन्होंने कुछ प्रबन्ध किया है।'

साहब ने उदारता का परिचय दिया - वे तत्काल सहमत हो गए। मैं परदे के पीछे चला गया। तीसरी घंटी के साथ मैंने परदा खोला। बीच में मैं और आसपास मेरे विद्यार्थी थे। हमारी कक्षा में रोज गाया जाने वाला एक गीत हम प्रार्थना के रूप में गा रहे थे। कमरे में शान्ति का साम्राज्य था। सब इस विचार में पड़े थे कि एकाएक यह नाटक कैसा?

प्रार्थना के बाद छात्रों ने 'कचहरी मैं जाऊँगा' नामक एक खेल शुरू किया। एक लड़का चूहा बना। कमर में रस्सी बाँधकर उसने अपनी पूँछ बनाई थी। सिर पर काला कपड़ा ओढ़े था और चार पैरों से चलकर वह 'चूँ-चूँ, कर रहा था। एक लड़का दर्ज़ी, दूसरा बेल-बूटे वाला, तीसरा मोतीवाला, चौथा मृदंगवाला, पाँचवाँ राजा और छठा यानी मैं राजा का सिपाही बना था।

सब पात्र हमेशा की सादी पोशाक में थे। राजा टेबल पर रौब से बैठा था। सिर पर तिरछी टोपी पहने था। सिपाही ने अर्थात मैंने अपनी मूँछों पर ताव देकर मूँछें खड़ी कर ली थीं। साफा कुछ टेढ़ा बाँध लिया था और हाथ में एक छुरी रख ली थी। मृदंगवाले के पास मृदंग था। दूसरे सब खाली हाथ थे।

हमारा रंगमंच बिल्कुल सादा था। परदे के पीछे एक तख़्ते पर सारा कार्यक्रम दिख रहा था। कमरा साफ़ झाड़ा और बुहारा हुआ था। एक छोटी दरी एक छात्र के घर से मँगाकर फ़र्श पर बिछाई थी। पाठशाला में ऐसी कोई चीज़ नहीं थी जो रंगमंच की शोभा के लिए रखी जा सके। फिर भी पीपल और नीम की डालियाँ काटकर पत्तियों से दीवारें सजा दी गई थीं। फ़र्श पर लड़कों ने रंग-बिरंगी खड़िया से अपनी पसन्द के चित्र बनाए थे। चूहे का नाटक शुरू हुआ और फिर ख़त्म हुआ। बड़े और छोटे बस शान्त भाव से देखते रहे।

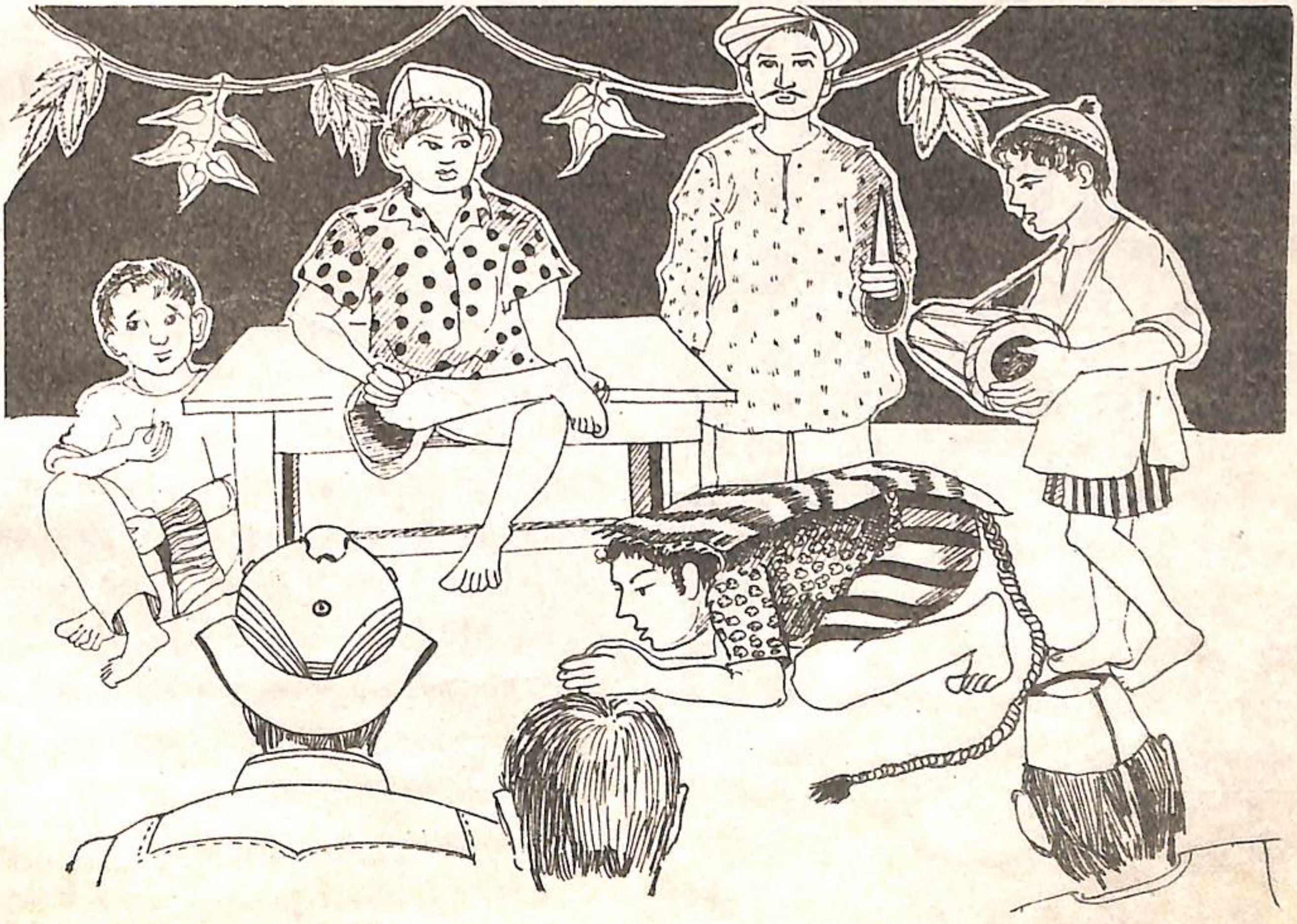

छोटे यानी विद्यार्थी तो बड़ी ही दिलचस्पी के साथ देख रहे थे - बड़े भी आश्चर्य में डूबकर देख रहे थे।

मुझे कहना चाहिए कि लड़कों ने नाटक सुन्दर ढंग से खेला था। वे भूलें नहीं कर रहे थे। 'प्रॉम्पटर' (पीछे से बताने वाला) कोई रखा ही नहीं गया था। जहाँ ज़रा भी ग़लती का शक होता था, वहाँ मैं ही प्रकट रूप से उसको सुधार देता था।

दूसरा नाटक 'बुढ़िया' और तीसरा 'खरगोश' खेला गया। ले-देकर परदा एक ही था। सीन-सीनरी नाम लेने को भी न थी। लड़के कभी सिर पर कपड़ा ओढ़ लेते थे, कभी हाथ में छड़ी ले लेते थे। बाक़ी सारा आधार तो लड़कों के अभिनय पर ही था।

अन्तिम प्रार्थना के बाद नाटक का कार्य समाप्त हुआ और मैं रंगमंच पर आया। मैंने नाटक के मैनेजर की हैसियत से अपने दर्शकों से कहा, 'सज्जनो! हमारे इन नाट्य-प्रयोगों को शांतिपूर्वक देखने के लिए हम हृदय से आपका उपकार मानते हैं। इस सम्बंध में मैं आपसे एक निवेदन करना चाहता हूँ। आशा है, आप सुनने की कृपा करेंगे।'

'ये चौथी कक्षा के विद्यार्थी हैं। जब मैंने इनसे पूछा कि इस अवसर पर हम भी अपने नाटक क्यों ने खेलें तो ये सहर्ष तैयार हो गए। इन्होंने बड़े उत्साह और तत्परता का परिचय दिया। तुरन्त ही नाटक पसन्द किए गए। जो कहानियाँ इन्होंने पढ़ी और सुनी थीं, आपके सामने अभी उन्हीं का अभिनय ये कर चुके हैं। मैंने इनसे कहा था कि जिस तरह हर हफ़्ते हम बिना किसी तैयारी के नाटक खेलते हैं, उसी तरह इस बार भी खेलेंगे। हमारी कक्षा में कोई चीज़ रटाई नहीं जाती। छात्रों को कहानी का कथानक भली-भाँति याद रह जाता है। हर पात्र जानता है कि कहानी में उसका कथन क्या है। फिर तो रंगमंच पर कहानी का सम्बंध बनाए रखकर प्रसंग के अनुसार ये स्वयं वार्तालाप कर लेते हैं। किसी छात्र को कभी अपना पार्ट याद करने की आवश्यकता नहीं रहती। सीन-सीनरी और वेश-भूषा तो नाटक के गौण अंग हैं, महत्वपूर्ण अंग तो अभिनय और भाव-प्रदर्शन हैं। हम इसी पर विशेष ध्यान देते हैं।'

डायरेक्टर साहब के मुँह पर प्रसन्नता खेल रही थी। मैं बड़ी देर से इस बात को देख रहा था। वे तुरन्त ही उठे और अंग्रेज़ी में बोले-

'श्री लक्ष्मीशंकर और उनके विद्यार्थियों ने अभी-अभी जिस रूप में हमारा वास्तविक मनोरंजन किया है, उसके लिए मैं उनका अभिनन्दन करता हूँ। उनका काम सचमुच ही सुन्दर था। मुझे तो ऐसा प्रतीत होता था, मानो मैं अपनी मातृभूमि इंग्लैंड में हूँ। वह दृश्य निस्सन्देह अद्‌भुत था, जब ये नन्हें-नन्हें बालक स्वयं स्फूर्ति से चूहे, दर्ज़ी और राजा का अभिनय कर रहे थे! 'रेसीटेशन' और रटे हुए संवादों का ज़माना तो अब लद चुका है। ये चीज़ें वास्तव में क्रूर, असभ्य और आत्मा का नाश करने वाली हैं।'

इतना कहकर वे कुछ ठहरे और फिर कहने लगे, 'मैं फिर कहता हूँ कि आज का यह काम देखकर मुझे बहुत आनन्द हुआ है। इसके लिए मैं इनको इनाम नहीं दूँगा। नाटक खेलते समय इन्हें जो वास्तविक आनन्द मिल रहा था, इनके लिए वही सच्चा इनाम है। सचमुच, आज मैं बहुत ख़ुश हूँ। बहुत ही ख़ुश।'

सम्मेलन समाप्त हुआ। लोग अपने-अपने घर गए। साहब की ख़ुशी का ठिकाना न रहा। उन्होंने बड़े साहब के साथ मेरा परिचय कराया और मेरे प्रयोग की बात भी कही। साहब ने मेरे साथ हाथ मिलाते हुए कहा, 'शाबाश! आप अपने काम में सफल हुए हैं। ऐसे प्रयोग बराबर करते रहिए। असल शिक्षा तो इसी में है, और तो सब निरुपयोगी है, निरा ढोंग है।'

डायरेक्टर के इन शब्दों ने मेरे साहब के मन में कैसी गुदगुदी और कितना गर्व पैदा किया होगा, आप ही सोच लें! मैं तो प्रसन्न ही था।

(मूल गुजराती से अनुवाद काशिनाथ त्रिवेदी। नेशनल बुक ट्रस्ट, इण्डिया के सौजन्य से)

बहेड़ा

तुमने हर्र-बहेड़ा-आँवला इन तीनों का नाम बार-बार सुना होगा। इन तीनों से बनाए गए तेल या साबुन से सिर के बाल अच्छे रहते हैं, काले रहते हैं, आदि-आदि। यह बात कितनी सही है इस बारे में हम बात नहीं कर रहे। बल्कि हमने बहेड़ा के पेड़ की कुछ जानकारी तुम्हारे लिए इकट्ठी की है।

बहेड़ा का पेड़ सड़क के किनारे लगाया जाता है। वैसे आमतौर पर यह जंगलों में ख़ूब मिलता है। यह सुन्दर पेड़ पहाड़ों के तलहटी में भी पाया जाता है। बहेड़ा सामान्य उपजाऊ ज़मीन में लगता है। कहीं-कहीं तो यह पेड़ 120 फुट तक लम्बा हो जाता है।

यह पेड़ ख़ूब पत्तों से भरा रहता है। इसके पत्ते बड़े, अण्डाकार होते हैं। डँगाल पर पास-पास पत्ते लगे होने से पेड़ ख़ूब घना दिखाई देता है। अप्रैल तक पेड़ से पत्ते पीले होकर झड़ने लगते हैं। उसके बाद छोटे-छोटे .खुशबूदार फूल निकलने लगते हैं। फूल कुछ हरापन सा लिए सफ़ेद होते हैं। बहेड़ा के फल आकार में छोटे होते हैं पर एक ही पेड़ के फल अलग - अलग आकार के दिखाई देते हैं कोई गोल तो कोई अण्डाकार। ये बहुत कुछ बादाम से मिलते - जुलते होते हैं। फल पर मोटा छिल्का होता है। ठण्ड का मौसम आते-आते पेड़ पर फल लगने लगते हैं। पकने के बाद फल भूरे-से रंग के दिखाई देते हैं। फल के छिल्के के भीतर का गूदा जो बादाम की मिंगी की तरह होता है, खाने में बहुत स्वादिष्ट होता है।

बहेड़े के पौधे, बीज गिरने से पेड़ के नीचे ही लग जाते हैं। यह पेड़ शुरू में धीरे-धीरे बढ़ता है, फिर अच्छी उपजाऊ ज़मीन हो तो जल्दी बढ़ने लगता है। गर्मी से सूखी हुई ज़मीन में यह पेड़ नहीं पनपता। इसके फल नवम्बर से पककर गिरने लगते हैं। इन्हें बीनकर, गुठली निकालकर धूप में सुखाकर रख लिया जाता है। इस तरह इनको एक साल तक भी रखा जा सकता है। बाद में इन्हीं बीजों को बोकर नए पौधे लगाए जाते हैं। आमतौर पर बारिश के मौसम में इन बीजों को बोया जाता है।

बहेड़ा के पेड़ की लकड़ी पीली-सी होती है। इससे पैकिंग के लिए डिब्बे बनाए जाते हैं। इसके बीजों से तेल निकाला जाता है जो सिर में लगाने के काम आता है। इसका फल कई तरह की बीमारियों में दवा के रूप में काम आता है। त्रिफला नाम की एक दवा है जो कई बिमारियों में काम आती है, उस दवा में तीन में से एक फल बहेड़े का होता है। पेड़ के तने से एक तरह का गोंद निकलता है जो दवा के रूप में खाया जाता है। फल से रंग और स्याही भी बनाई जाती है। ●●

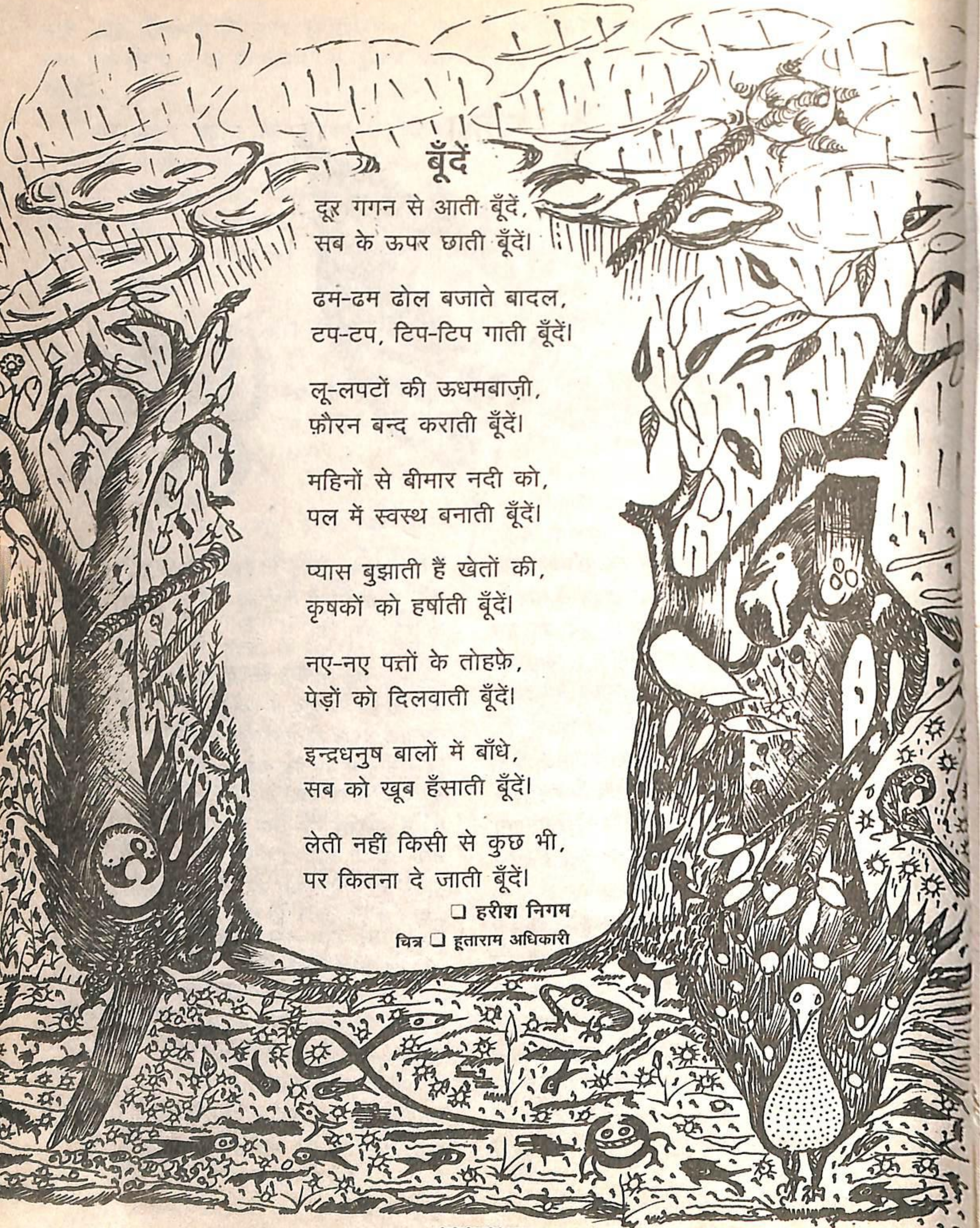

बूँदें

दूर गगन से आती बूँदें,
सब के ऊपर छाती बूँदें।

ढम-ढम ढोल बजाते बादल,
टप-टप, टिप-टिप गाती बूँदें।

लू-लपटों की ऊधमबाज़ी,
फ़ौरन बन्द कराती बूँदें।

महिनों से बीमार नदी को,
पल में स्वस्थ बनाती बूँदें।

प्यास बुझाती हैं खेतों की,
कृषकों को हर्षाती बूँदें।

नए-नए पत्तों के तोहफ़े,
पेड़ों को दिलवाती बूँदें।

इन्द्रधनुष बालों में बाँधे,
सब को खूब हँसाती बूँदें।

लेती नहीं किसी से कुछ भी,
पर कितना दे जाती बूँदें।

❑ हरीश निगम

चित्र ❑ हूताराम अधिकारी

बारिश हुई रूम झुम, उग आए मशरूम

बारिश जब कुछ कम होने लगती है और बीच-बीच में धूप निकल आती है तो भादों की चिपचिपी गर्मी का-सा मौसम हो जाता है। इस मौसम में खाना आमतौर पर जल्दी ख़राब हो जाता है। कभी-कभी रोटी या डबलरोटी पर फफून्द लग जाती है। वैसे इस मौसम में घर के बाहर भी जगह-जगह फफून्द दिखाई दे जाती है, और कुकरमुत्ते भी। तो इस बार हम तरह-तरह के कुकुरमुत्ते देखेंगे। वैसे इसका नाम कुछ अजीब-सा है न।

असल में ऐसी धारणा है कि बारिश में कुकुर यानी कुत्ते जहाँ कहीं पेशाब कर देते हैं वहीं ये उग आते हैं। इसीलिए इसका नाम पड़ा - कुकुरमुत्ता। लेकिन सच बात यह है कि ये कुत्ते की पेशाब से नहीं बल्कि अन्य पौधों की भाँति बीज जैसी रचनाओं से उगते हैं जिन्हें 'स्पोर' कहा जाता है। वैसे जहाँ तक नाम का सवाल है तो बचपन में हम इन्हें 'मेंढक की छतरी' भी कहते थे। क्योंकि बारिश में मेंढक और इनका आगमन साथ-साथ ही होता है। तुम्हारे अपने इलाक़े में भी इनका कुछ और नाम हो सकता है। जैसे म.प्र. के होशंगाबाद-बैतूल ज़िलों में इन्हें भमोड़ी कहा जाता है। कई जगह ये खुम्बियों के नाम से भी जाने जाते हैं। ख़ैर .. आजकल इनका अंग्रेज़ी नाम यानी मशरूम ज़्यादा प्रचलित है, क्यों न हम भी वही इस्तेमाल करें।

चलो पहले यह तो जान लें कि मशरूम आख़िर होते क्या हैं, और फफून्द से इनका क्या नाता है? फफून्द दरअसल पौधों की तरह के ही जीव हैं पर न तो इनमें अन्य पेड़-पौधों की तरह हरापन (क्लोरोफ़िल) होता है और न ही उनकी तरह जड़, तने, पत्ती का व्यवस्थित ढाँचा। रोटी या काई वाली जगहों पर उगने वाले फफून्द, आटे में डलने वाला खमीर और मशरूम आदि, सब फफून्द परिवार के ही सदस्य हैं।

फफून्द का मुख्य हिस्सा होता है नलीनुमा एक भाग जो उस आधार पर जाल की तरह फैला रहता है जिस पर फफून्द उगा हो। इस जाल की नलियों में से ही फफून्द के बीज यानी स्पोर निकलते हैं या फिर स्पोर उगाने वाला अंग। स्पोर के बिखरने पर इनमें से नए फफून्द उग आते हैं। मशरूम फफून्द का एक ऐसा ही अंग है, जो नलियों में से उगता है और जिसमें से फिर स्पोर निकलते हैं। यानी मशरूम तो फफून्द का सिर्फ़ स्पोरधारी अंग मात्र है। फफून्द का मुख्य भाग उसकी नलीदार जाली है। यही जाली अपने आधार के जीवित या जैविक चीज़ों से भोजन चूसती है। यानी ये परजीवी हैं। पेड़-पौधों की तरह अपना भोजन ख़ुद नहीं बनाते।

अधिकतर मशरूम छतरी के आकार के होते हैं। छतरी के नीचे वाले हिस्से में पतली-पतली धारी-सी होती हैं। इनमें से ही स्पोर झड़कर गिरते हैं।

मशरूम का जीवनकाल उसको मिल रहे भोजन और वातावरण की नमी तथा गर्मी पर निर्भर करता है। अगर भोजन मिलता रहे और वातावरण अनुकूल हो तो यह साल दर साल ज़िन्दा रहता है। और हर साल अपने मौसम में स्पोर उगाता हुआ फलता-फूलता रहता है।

शायद तुम सोच रहे होगे कि आख़िर ये कुकुरमुत्ते या मशरूम हैं किस काम के? क्या ये वाकई मेंढकों की छतरियाँ हैं या और कुछ। भई इसका जवाब देना थोड़ा मुश्किल है। प्रकृति में हर चीज़ का कुछ न कुछ महत्व तो है ही। जैसे तुम्हारा-हमारा, वैसे ही इन दूसरे जीवों का। इनका एक उपयोग तो यही है कि इन्हें बड़े चाव से खाया जाता है।

आजकल शहरों में इसको खाद्य पदार्थ के रूप में बहुत इस्तेमाल किया जा रहा है। पर सदियों से जंगलों में रहने वाले आदिवासी लाग इस बात में भी हमसे आगे हैं। वे ज़माने से इन भमोड़ियों यानी खुम्बियों को खाते आए हैं। लेकिन मशरुमों की सभी प्रजातियाँ खाई नहीं जातीं। इनमें से कुछ तो ज़हरीली होती हैं और खाने पर शरीर में गम्भीर असर ला सकती हैं। पर बहुत सी ऐसी प्रजातियाँ भी हैं जिन्हें अगर ठीक से पकाया जाए तो बढ़िया सब्ज़ी बन जाए।

ख़ैर। सब्ज़ी-वब्ज़ी तो बाद में पका लेंगे। चलो पहले कुछ नमूने तो देख लें मशरुमों के।

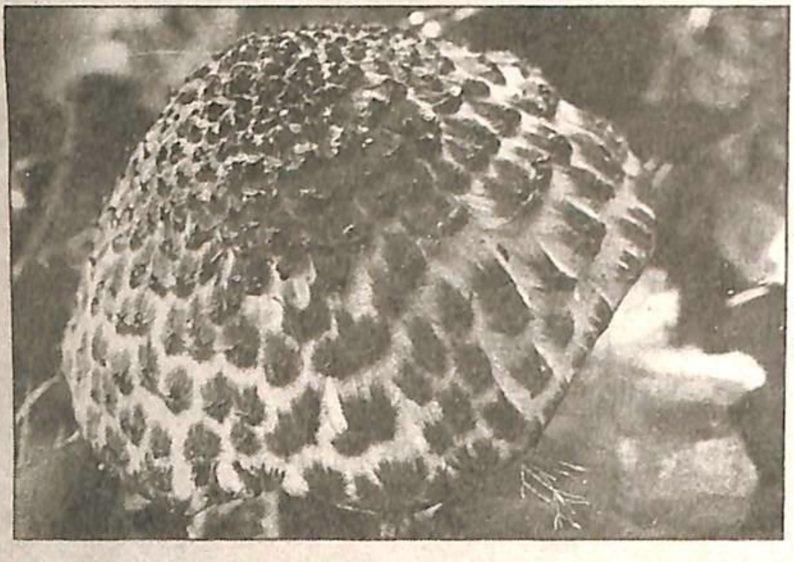

पतझड़ के मौसम में उगने वाला यह कुकुरमुत्ता जंगलों में ख़ूब उगता है, पर अपनी छतरी की रंगत और बनावट के कारण झड़ी हुई पत्तियों में छुपा रहता है।

क्या पड़े हैं यहाँ? संतरे के छिलके? जी नहीं जनाब ये भी मशरूम ही हैं। मज़ेदार बात यह है कि अंग्रेज़ी में इसे 'ऑरेंज पील' यानी संतरे के छिलके ही कहा जाता है। पकाकर खाने पर यह बहुत स्वादिष्ट लगता है।

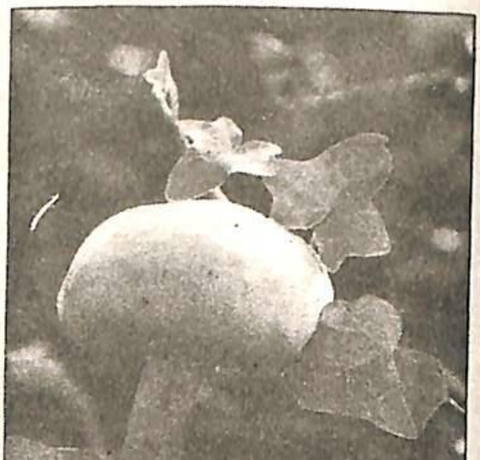

मशरूम की न खाई जा सकने वाली प्रजातियों में से एक। इसे खाने से अपच हो जाता है। इसकी ख़ासियत यह है कि इसे जहाँ कहीं चोट लगती है, वहाँ से इसका रंग पीला पड़ने लगता है।

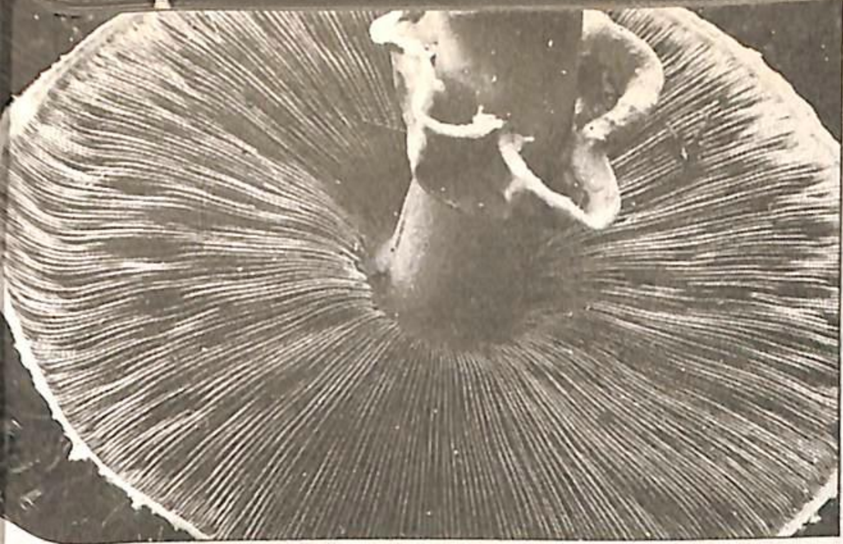

जंगलों में पतझड़ मौसम में उगने वाला 'लकड़ी कुकुरमत्ता'। खाने के लिए घरों में उगाए जाने वाले कुकुरमुत्ते का क़रीबी रिश्तेदार है, और पकाने पर इसका स्वाद भी उनके जैसा ही होता है।

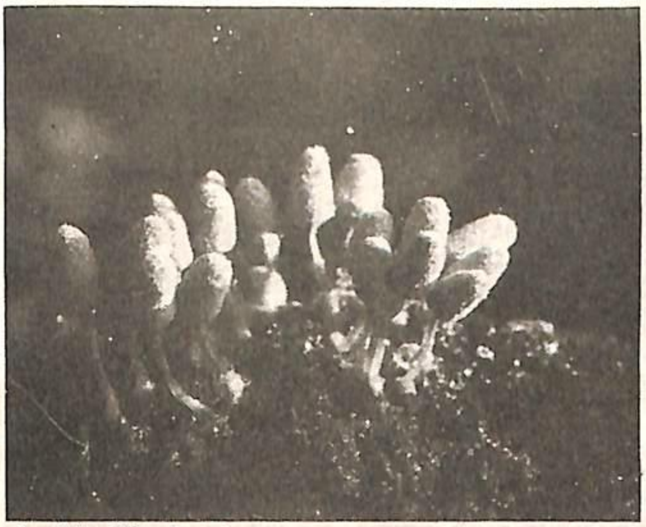

ये छोटे-छोटे से छत्ते गिरे हुए पेड़ों के तनों पर उगते हैं, पर बहुत आम नहीं हैं। जब इनके फूले हिस्से टूट जाते हैं तो इनमें भरे स्पोर छिटककर बिखर जाते हैं।

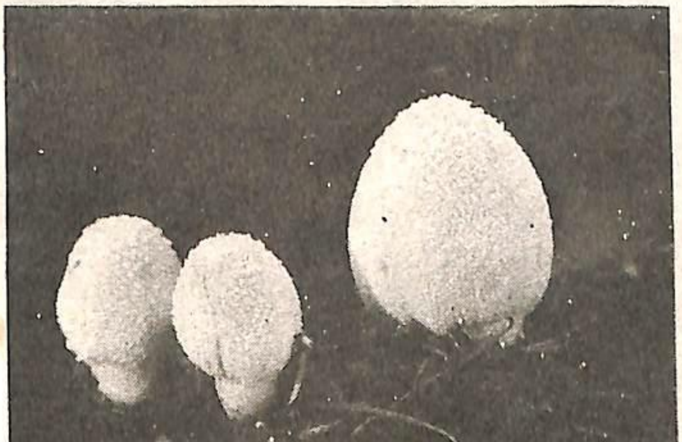

गाय, बैल के गोबर या घोड़े आदि की लीद पर उगने वाला यह मशरूम ऊपर से एक सफ़ेद महीन चूर्ण से ढका रहता है। इसके नीचे छत्ते का रंग हल्का भूरा होता है।

उम्र के साथ-साथ हम लोगों की लम्बाई-चौड़ाई, डील-डौल बढ़ता है, है ना। लेकिन इन मशरूम महाशय को देखो। जब ये कच्ची उम्र के होते हैं तो लम्बे, ह्रष्ट-पुष्ट नज़र आते हैं, लेकिन जब वयस्क होते हैं तो बौने हो जाते हैं। यहाँ दोनों नमूने हाज़िर हैं। बाईं ओर वयस्क और दाहिनी ओर कच्ची उम्र के।

पतझड़ी जंगलों में उगने वाला यह मशरूम लगभग 20 से.मी. ऊँचा होता है। आमतौर पर हल्के मटमैले रंग का होता है, पर कभी-कभी सफ़ेद या भूरे रंगों में भी पाया जाता है।

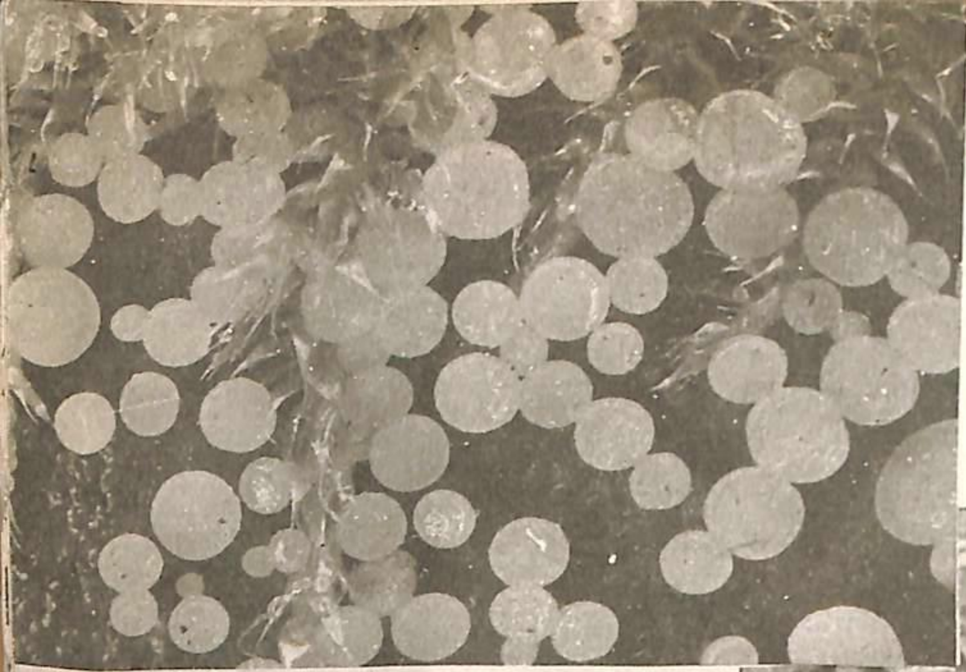

सड़ती हुई लकड़ी पर पीले रंग का यह कुकुरमुत्ता अक्सर उग आता है।

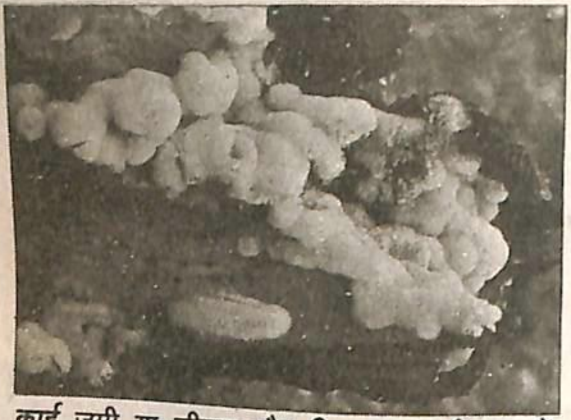

काई जमी या कीचड़ और फिसलन वाली जगहों पर उगने वाला मशरूम।

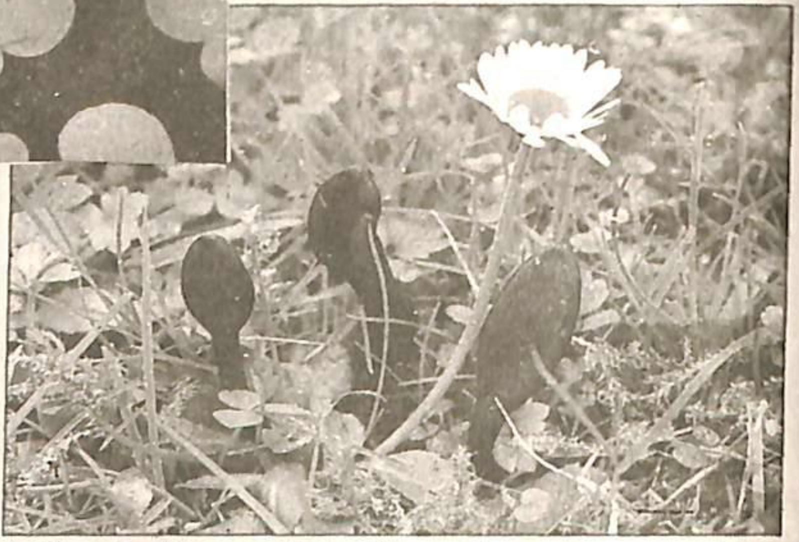

'ज़मीन की जीभ' - काले रंग के नाग के फननुमा कुकुरमुत्ते का यही नाम है। आकार में बहुत छोटा होता है। यहाँ कई गुना बड़ा करके दिखाया गया है।

पतझड़ी जंगलों में ख़ूब उगने वाला प्रिंस मशरूम। तोड़ने या पीसने पर इसमें से बादाम-सी ख़ुशबू आती है। खाने में बेहद स्वादिष्ट होता है।

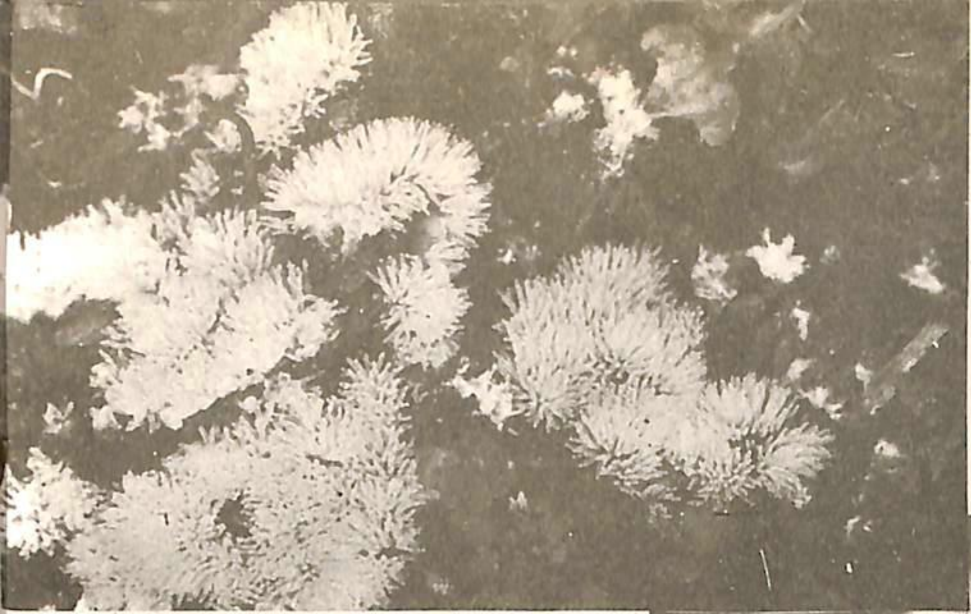

और यह है कीचड़ और गन्दगी में उगने वाला मशरूम, जो समुद्री वनस्पति जैसा दिखता है।

पहाड़ी पेड़ों की बाहर निकली जड़ों पर उगने वाला मशरूम। यूँ तो यह पीलापन लिए होता है पर ज्यों-ज्यों बड़ा होता है, इसमें लाली आती जाती है।

पतझड़ी जंगलों में गिरे हुए पत्तों पर उगने वाला एक बहुत आम मशरूम है। शुरू में यह कुछ भूरे-से रंग का होता है, पर बड़ा होते-होते सफ़ेद हो जाता है।

यह भी पतझड़ी जंगलों में उगने वाला एक आम मशरूम है।

ये उल्टे छत्ते चूने वाली ज़मीन पर या चूना पत्थर की पहाड़ियों पर ही अधिकतर उगते हैं। इसकी खासियत यह है कि इसका आकार छतरी की तरह नहीं, बल्कि हवा से पलटी हुई छतरी की तरह का होता है।

सड़ती हुई लकड़ी पर उगने वाली एक प्रजाति की शुरूआती अवस्था का चित्र। इस अवस्था में यह चिपचिपी जैली जैसा दिखता है, पर बाद में बड़ा होने पर सूखकर छोटी-छोटी कड़क गोल आकृतियों का रूप ले लेता है।

इस मशरूम की शक्ल काफ़ी कुछ पुराने ज़माने में जजों द्वारा पहने जाने वाली विग जैसी है, है ना मैदानों तथा चारागाहों में यह बहुतायत में पाया जाता है।

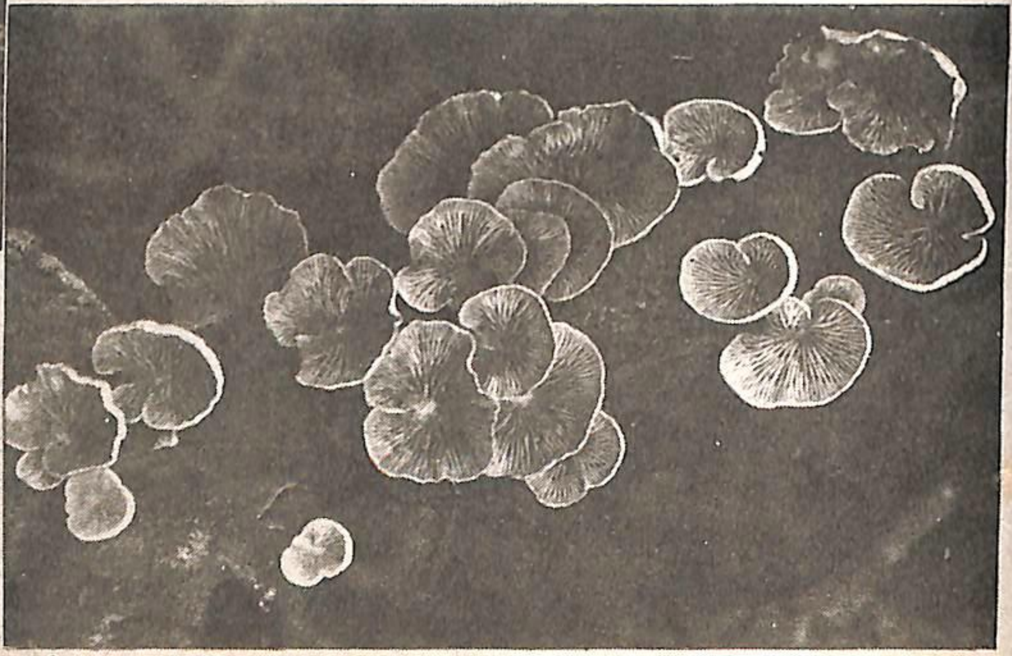

पेड़ की टूटकर गिरी शाखाओं या बाँस आदि पर उगने वाला यह मशरूम हमारे देश में भी खूब पाया जाता है।

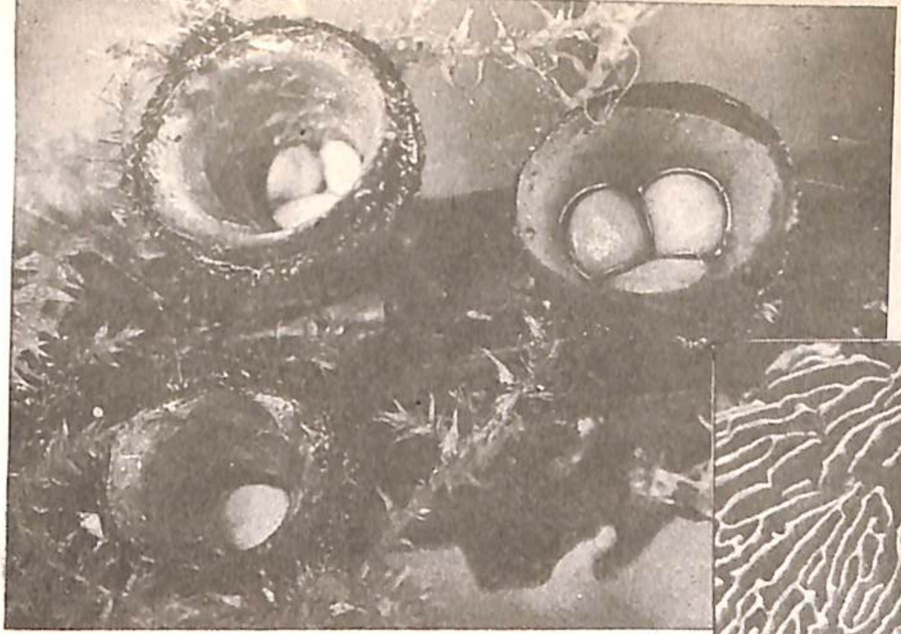

ये क्या, मशरूमों के बीच चिड़ियों के घोंसले और अण्डे कहाँ से आ गए? नहीं जी नहीं। ये भी एक तरह के मशरूम ही हैं।

पतझड़ी पेड़ों के सूखे ठूँठों या डँगालों पर उगने वाला एक मशरूम।

मोम से बनी सुन्दर मूर्ति की तरह का यह मशरूम नमी और सीलन वाली जगहों पर खूब उगता है - पर बहुत आम नहीं है।

यह है शर्मीला मशरूम। सड़ती हुई लकड़ी पर उग आता है। शर्मीला इसलिए क्योंकि कहीं से भी टूटने पर उस जगह से लाल होना शुरू हो जाता है।

शहद फंगस - नाम का यह मशरूम बहुत पाया जाता है।

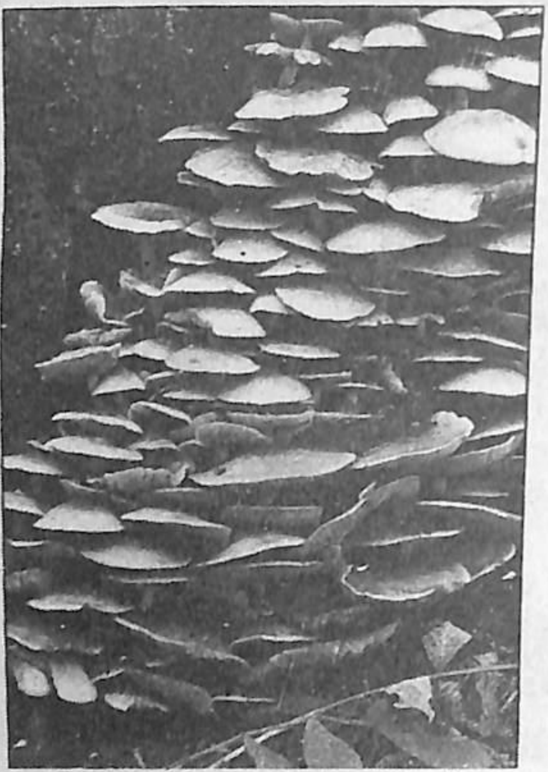

सड़ती हुई लकड़ी पर बहुतायत में उगने वाला एक मशरूम।

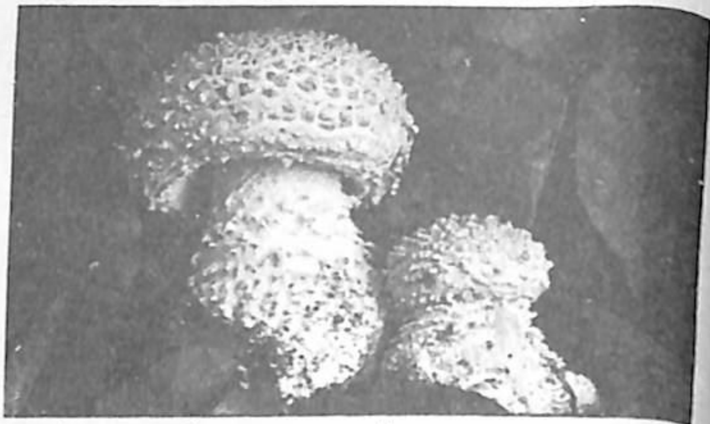

यह छोटा-सा सफ़ेद मशरूम कई बार कुछ हरापन लिए होता है। आमतौर पर यह ज़हरीला माना जाता है।

कुकुरमुत्ते की एक दुर्लभ प्रजाति।

सुनसान घास भरे मैदानों में बसन्त के मौसम में उगने वाला मशरूम। तोड़कर तुरन्त पकाकर खाने पर स्वादिष्ट लगता है। थोड़ी देर रखने पर यह बेस्वाद हो जाता है।

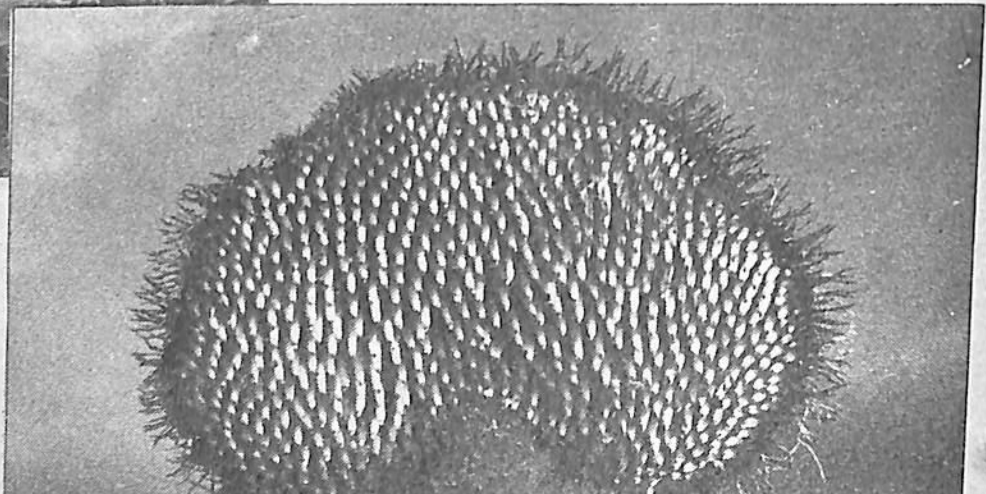

पहाड़ों पर उगने वाले पाइन के पेड़ों की शाखाओं पर उगने वाला मशरूम। यह इन पेड़ों से गिरे हुए पाइन कोन पर भी उग आते हैं।

जंगल में पड़ी सड़ती लकड़ी पर उगने वाली एक आम प्रजाति का मशरूम। गर्मी के आख़िर में इसमें से एक सड़ान्ध-सी निकलती है।

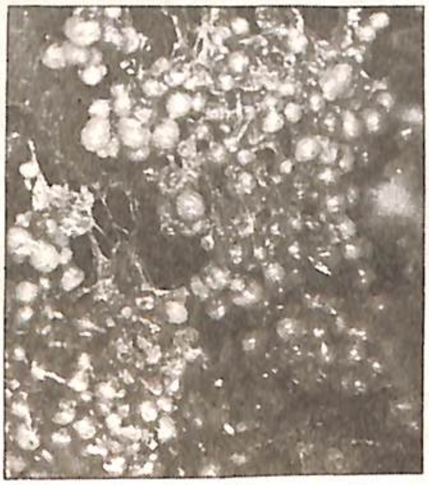

पीले रंग के छोटे-छोटे बटन की तरह के ये मशरूम चाशनी जैसे किसी तरल से सने हुए दिखते हैं।

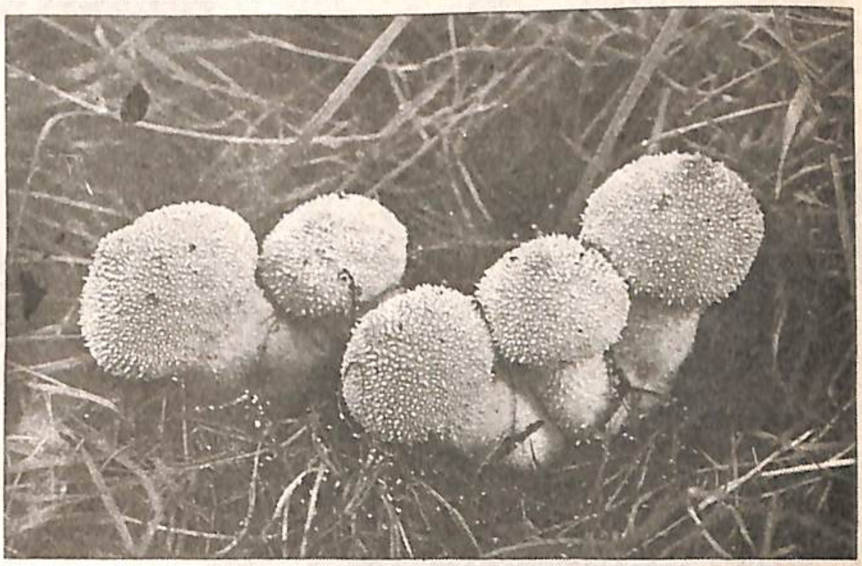

टेनिस की गेंद की तरह दिखने वाला यह मशरूम जंगलों या खुले मैदानों में उगता है।

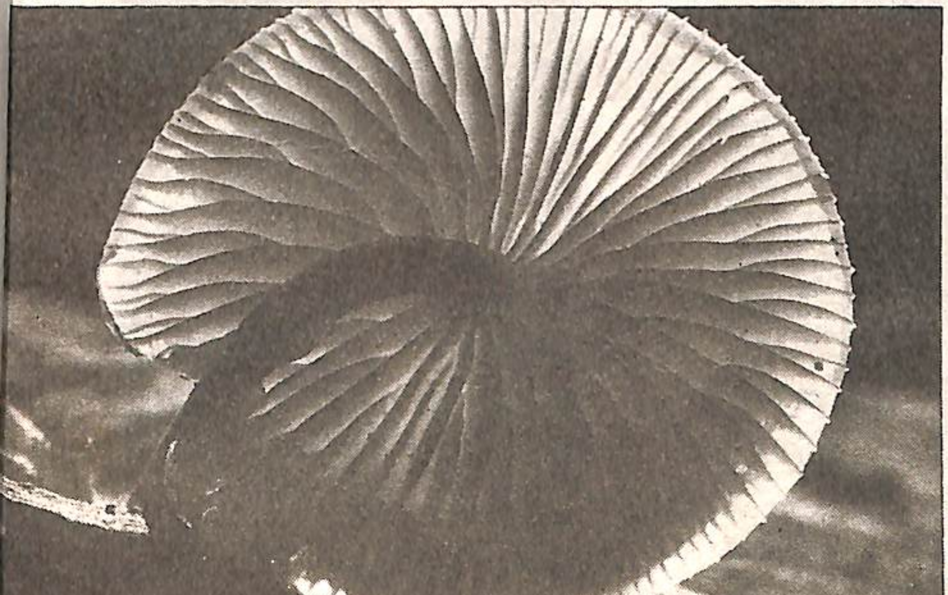

'अण्डा फ्राई फफून्द' या 'चीनी-मिट्टी फफून्द' के नाम से मशहूर मशरूम।

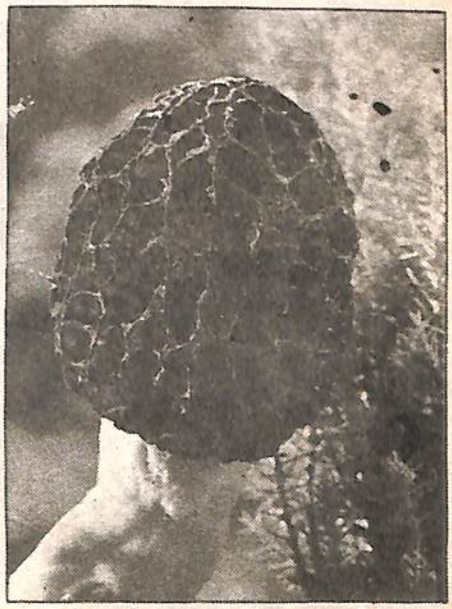

सड़ती हुई वनस्पति पर उगने वाला काले रंग का मशरूम।

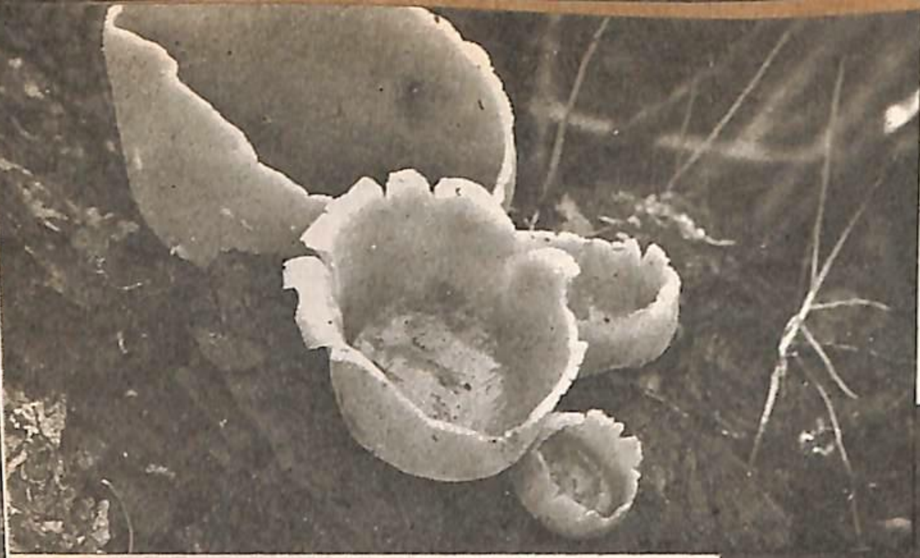

पहाड़ी पेड़ों, ख़ासकर 'बीच' नाम के पेड़ों की ठूँठों पर उगने वाला मशरूम।

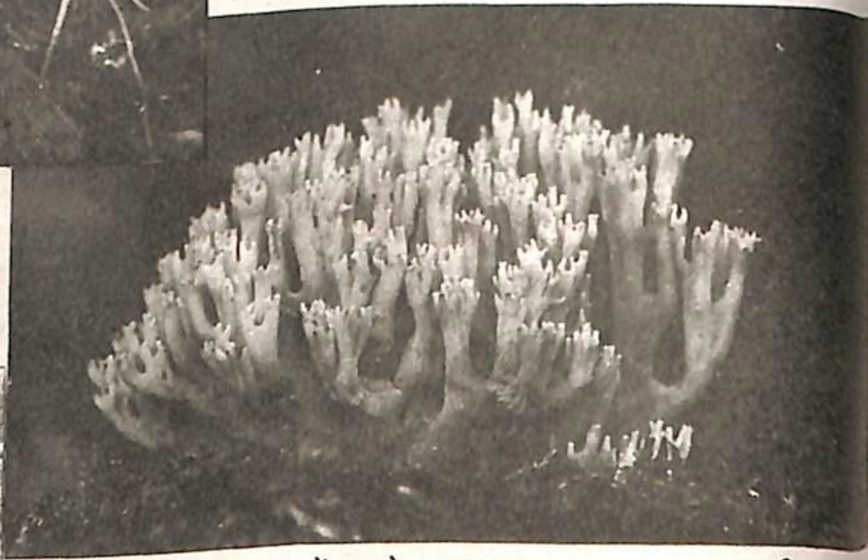

गर्मियों और पतझड़ में उगने वाला यह मशरूम बहुत कम ही दिखाई पड़ता है।

ऐसी ही एक और दुर्लभ प्रजाति। प्याले के आकार के ये मशरूम टूटे हुए तनों पर उगते हैं।

छड़ी पर टँगी टोपी की रचना वाले इस मशरूम की टोपी शुरू में सफ़ेद होती है, लेकिन कुछ दिनों बाद इस पर काले निशान उभरने लगते हैं।

ज़मीन पर उगने वाला मशरूम। आमतौर पर यह गुच्छों में मिलता है।

कुत्ता

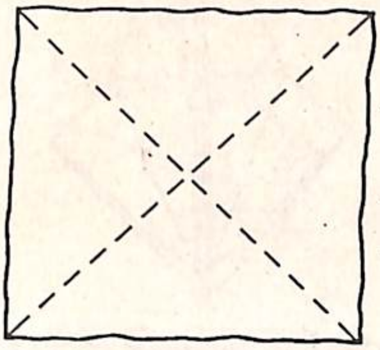

1. एक वर्गाकार काग़ज़ लो। चित्र में दिखाई दे रही टूटी रेखाओं पर से मोड़ बनाओ। मोड़ पक्के करके खोल लो। और काग़ज़ को पलट लो।

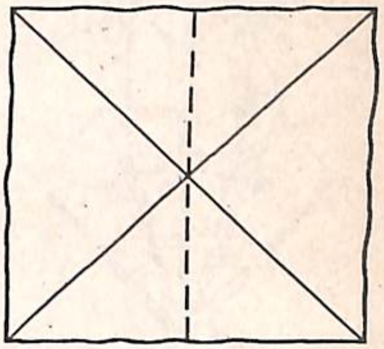

2. अब इस चित्र में दिख रही टूटी रेखा पर से मोड़ बनाओ, मोड़ पक्का करके वापस खोल लो।

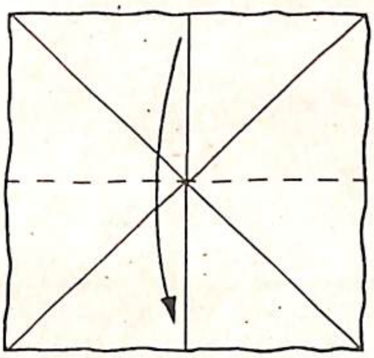

3. एक बार फिर चित्र में दिख रही टूटी रेखा पर से तीर की दिशा में मोड़ बनाओ।

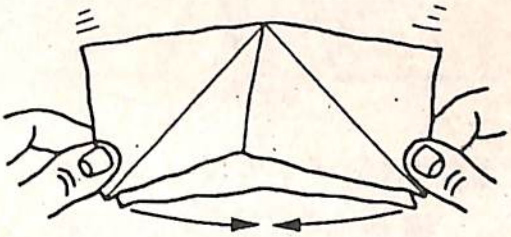

4. अब इस आकृति को चित्र में दिखाए अनुसार पकड़ो और दोनों सिरों को पास लाओ।

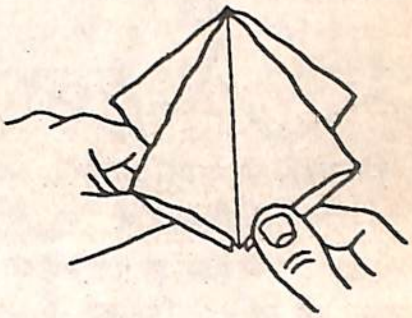

5. इस तरह।

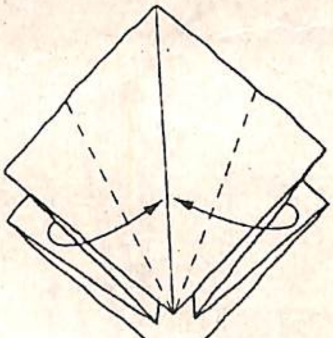

6. ऐसी आकृति बनेगी। अब इस चित्र में दिख रही टूटी रेखा पर से ऊपर की दो परतों को तीर की दिशा में मोड़ लो।

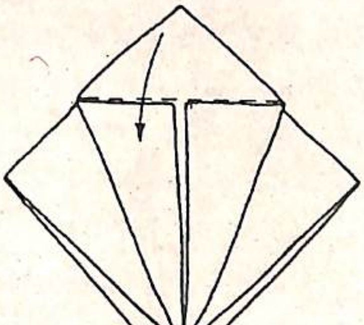

7. इसमें दिखाई दे रही टूटी रेखा पर से तीर की दिशा में मोड़ बना लो। चित्र 6 में जो मोड़ बनाए थे उन्हें खोल लो।

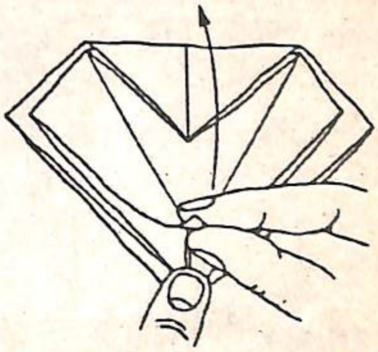

8. अब आकृति की सबसे ऊपरी परत को पकड़कर तीर की दिशा में ले जाओ बाक़ी आकृति को दबाकर पकड़े रहना।

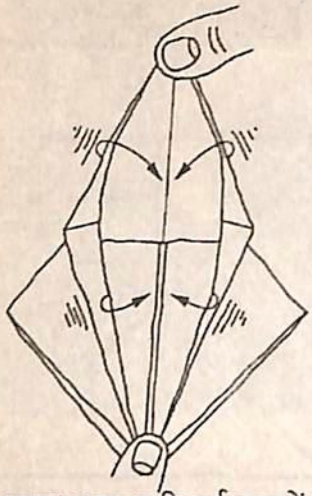

9. इस तरह। अब उठी हुई परतों को तीर की दिशा में ले जाते हुए दबाओ।

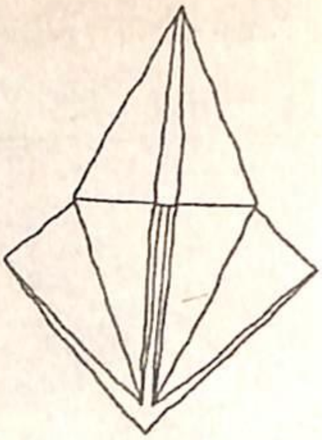

10. इस तरह की आकृति बनेगी। इसे पलट लो। इस तरफ भी चित्र 6 से 9 तक की सारी क्रियाएँ दोहरा लो।

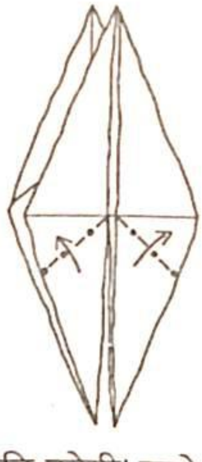

11. ऐसी आकृति बनेगी। इसके नीचे के दोनों सिरों को अलग - अलग दिशा में मोड़ो। चित्र में दिखाई दे रही टूटी रेखाओं पर से मोड़कर पहले निशान बना लो। फिर उस निशान पर से उस सिरे को अन्दर की ओर मोड़ लो। दूसरे सिरे को भी इसी तरह मोड़ लो।

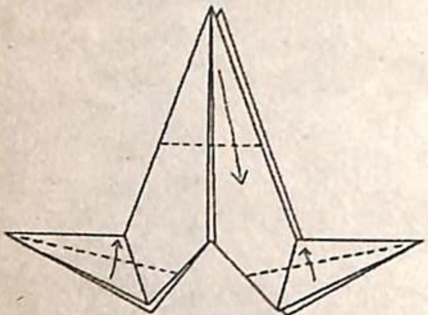

12. इस तरह की आकृति बनेगी। अब इस चित्र में दिखाई दे रही टूटी रेखाओं पर से तीर की दिशा में मोड़ बना लो। चित्र में दिखाई दे रहे निशान उपरी परतों के लिए हैं। आकृति को पलटकर नीचे वाले दोनों निशानों के हिसाब से उधर भी मोड़ बना लो।

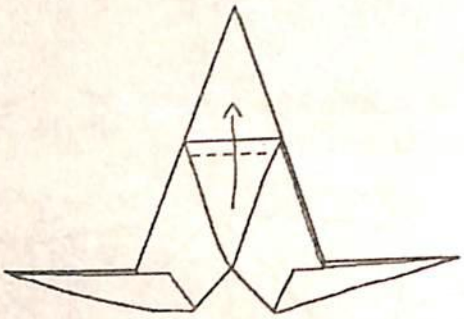

13. आकृति को वापस पलट लो। अब इस चित्र में दिख रही टूटी रेखा पर से तीर की दिशा में मोड़ बनाओ।

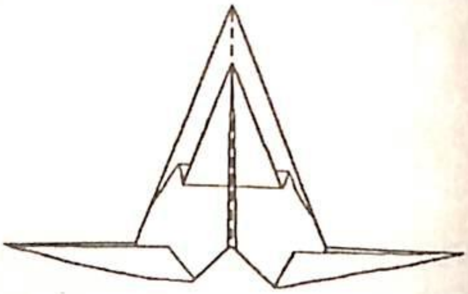

14. इस तरह की आकृति बन गई? अब इसे बीच से मोड़कर घुमा लो।

15. इस तरह। चित्र में दिख रही टूटी रेखा पर से मोड़कर निशान बनाओ। फिर इस निशान पर से बाईं ओर के सिरे को उलटते हुए मोड़ लो।

16. इस तरह। फिर से एक बार टूटी रेखा पर से ऊपर के सिरे को उलटते हुए मोड़ लो।

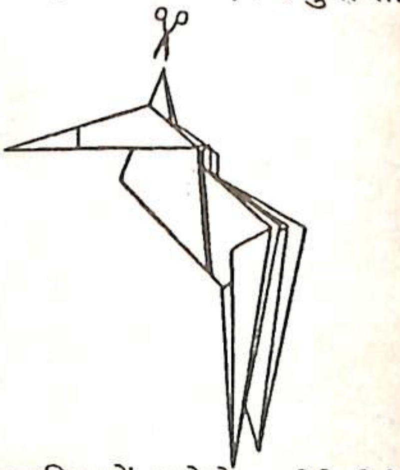

17. इस चित्र में आगे के नुकीले सिरे को टूटी रेखा पर से अन्दर की ओर मोड़ लो। और ऊपर के नुकीले सिरे को कैंची से काटकर दो हिस्से कर लो।

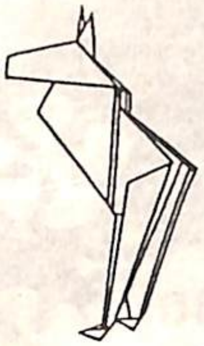

18. इस तरह की आकृति बनेगी। यह हो गया एक हिस्सा तैयार।

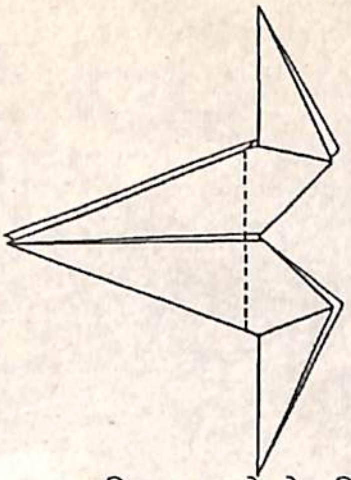

19. दूसरा हिस्सा बनाने के लिए दूसरा वर्गाकार काग़ज़ लो। और चित्र 1 से लेकर चित्र 11 तक की क्रियाएँ दोहरा लो। इस तरह की आकृति बन जाने के बाद इस चित्र में दिख रही टूटी रेखा पर से बाईं ओर की ऊपरी परत को मोड़कर दाईं ओर ले जाओ।

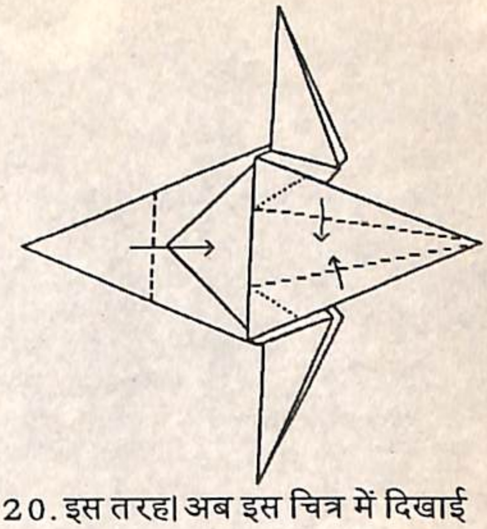

20. इस तरह। अब इस चित्र में दिखाई दे रही टूटी रेखाओं पर से मोड़ बनाओ। दाईं ओर के हिस्से में पहले नीचे की तरफ का मोड़ बनाओ। ऐसा करते हुए बिन्दू वाली रेखा की जगह भी अन्दर की तरफ एक मोड़ बनेगा, उसे बन जाने दो। इसी तरह ऊपर की तरफ भी करो।

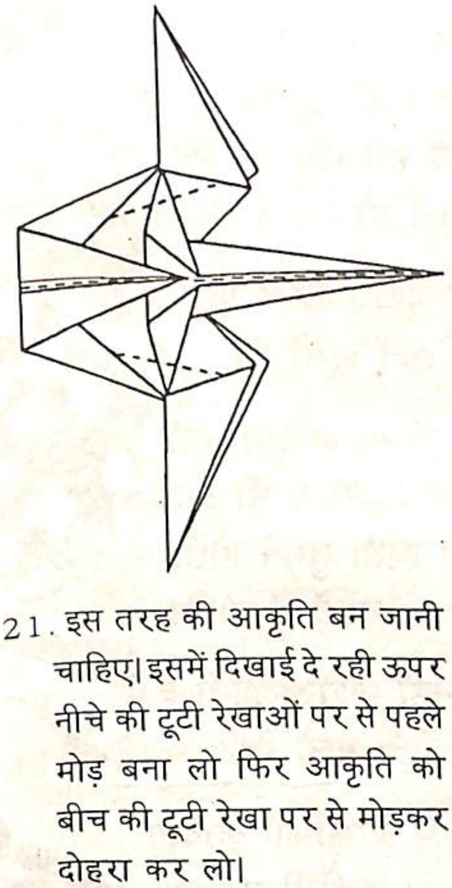

21. इस तरह की आकृति बन जानी चाहिए। इसमें दिखाई दे रही ऊपर नीचे की टूटी रेखाओं पर से पहले मोड़ बना लो फिर आकृति को बीच की टूटी रेखा पर से मोड़कर दोहरा कर लो।

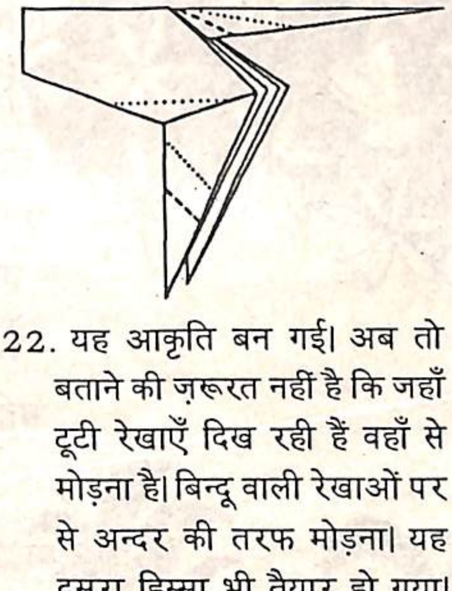

22. यह आकृति बन गई। अब तो बताने की ज़रूरत नहीं है कि जहाँ टूटी रेखाएँ दिख रही हैं वहाँ से मोड़ना है। बिन्दू वाली रेखाओं पर से अन्दर की तरफ मोड़ना। यह दूसरा हिस्सा भी तैयार हो गया।

23. दोनों हिस्सों को जोड़ लो। कैसे जोड़ना है इसमें अपनी अक्ल भिड़ाओ।

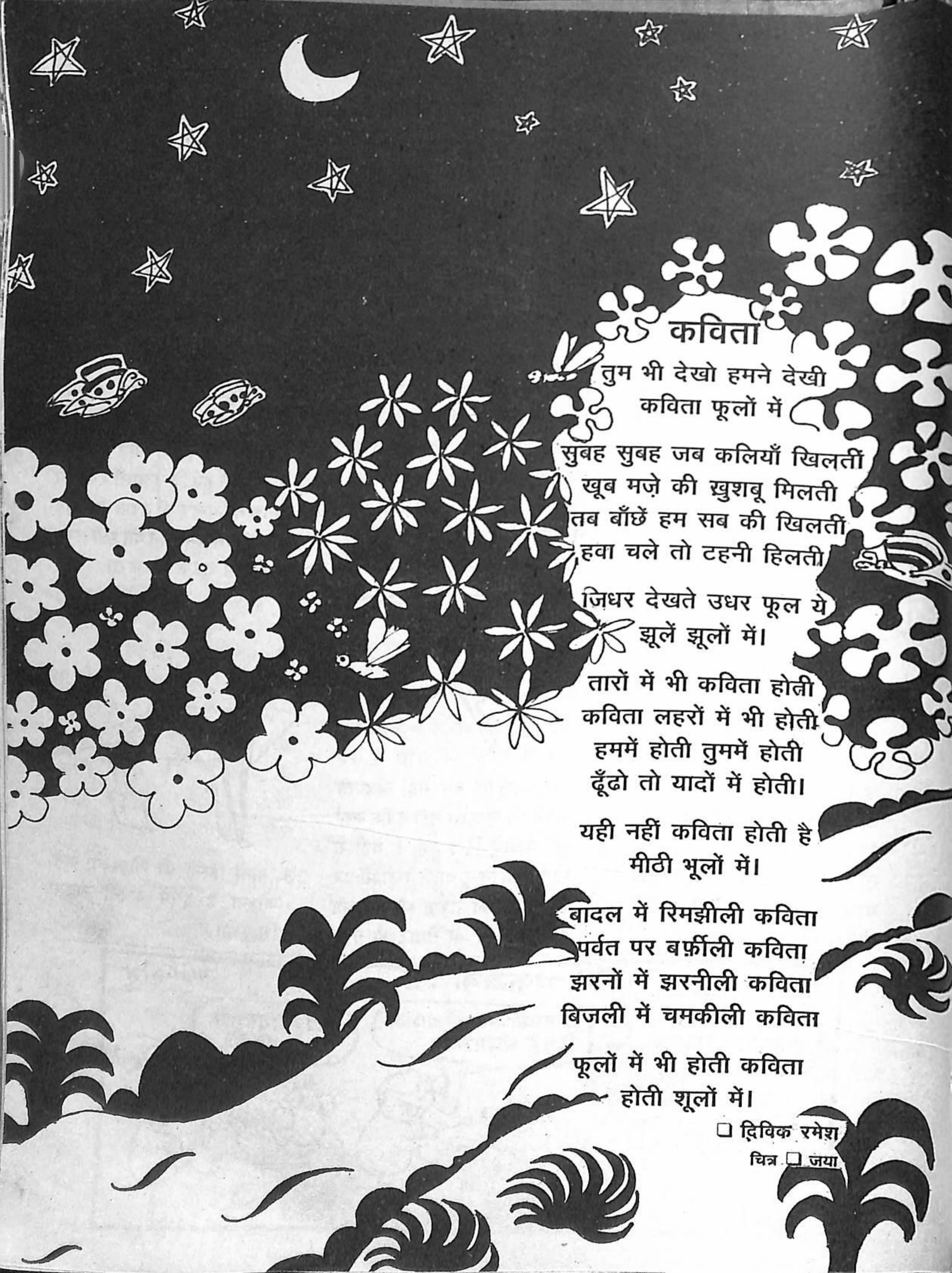

कविता

तुम भी देखो हमने देखी
कविता फूलों में

सुबह सुबह जब कलियाँ खिलतीं
खूब मज़े की ख़ुशबू मिलती
तब बाँछें हम सब की खिलतीं
हवा चले तो टहनी हिलती

जिधर देखते उधर फूल ये
झूलें झूलों में।

तारों में भी कविता होती
कविता लहरों में भी होती
हममें होती तुममें होती
ढूँढो तो यादों में होती।

यही नहीं कविता होती है
मीठी भूलों में।

बादल में रिमझीली कविता
पर्वत पर बर्फ़ीली कविता
झरनों में झरनीली कविता
बिजली में चमकीली कविता

फूलों में भी होती कविता
होती शूलों में।

❑ दिविक रमेश

चित्र ❑ जया

निमाड़ के गांधी : काशिनाथ त्रिवेदी

'निमाड़ के गांधी' के नाम से मशहूर वयोवृद्ध गांधीवादी श्री काशिनाथ त्रिवेदी का गत 26 जून, 1996 को इंदौर में देहान्त हो गया। वे नब्बे वर्ष के थे।

महात्मा गांधी, गिजुभाई और प्रेमचंद को अपना प्रेरणास्रोत मानने वाले काशिनाथ जी का ज़िक्र हम चकमक में जिस कारण से कर रहे हैं, वह है उनका बंच्चों की शिक्षा से जुड़ाव। वैसे काशिनाथ जी जीवन भर इतने सारे कामों से जुड़े रहे कि जानकर आश्चर्य होता है। वे शिक्षक, पत्रकार, सम्पादक, लेखक, मज़दूर, नेता, राजनीतिक और सामाजिक कार्यकर्त्ता, अनुवादक तो थे ही, इसके अतिरिक्त भी बहुत सारे कामों से जुड़े रहे।

16 फ़रवरी, 1906 को धार, म.प्र. के दिगठान में जन्मे काशिनाथ जी ने अपने कैरियर की शुरूआत सन् 1925 में शिक्षक के रूप में की।

बच्चों की शिक्षा से उनका लगाव गिजुभाई के सम्पर्क में आने पर बढ़ा। गिजुभाई के काम से वे बहुत प्रभावित थे। गिजुभाई की प्रसिद्ध पुस्तक 'दिवास्वप्न' और 'प्राथमिक शाला में भाषा शिक्षा' का गुजराती से हिन्दी में अनुवाद उन्होंने सन् 1932-33 में ही कर लिया था। इधर पिछले कुछ सालों में दिवास्वप्न का अनुवाद देश की लगभग सभी भाषाओं में हो चुका है। अपने इसी लगाव के चलते काशिनाथ जी ने गिजुभाई की शिक्षा से सम्बंधित 16 पुस्तकों की ग्रन्थमाला हिन्दी में प्रकाशित करने की योजना बनाई थी। लेकिन केवल 11 पुस्तकें ही प्रकाशित हो पाईं।

1948-49 में जब स्वतंत्र भारत में पहली मध्य भारत सरकार बनी तो काशिनाथ जी उसमें पहले शिक्षा मंत्री बने। इसी बीच 1949 में तेरहवीं अन्तर्राष्ट्रीय मोन्टेसरी परिषद की बैठक में भाग लेने वे इटली गए।

सह-सम्पादक के रूप में वे अजमेर में 'त्यागभूमि', और अहमदाबाद में 'हिन्दी नवजीवन' से जुड़े रहे। गुजराती में 'दक्षिणामूर्ति' त्रैमासिक

और 'छात्रालय' से सम्बद्ध रहे। 'हिन्दी शिक्षण पत्रिका' का इन्दौर से बीस वर्षों तक प्रकाशन किया। इन्दौर से ही 'शताब्दी सन्देश' का वर्षों तक प्रकाशन किया और सम्पादक भी रहे।

अगस्त, 1955 में उन्होंने धार ज़िले के टवलाई ग्राम में ग्राम भारती आश्रम की स्थापना की जो आज भी कार्यरत है।

उन्होंने 100 से अधिक पुस्तकों का गुजराती से हिन्दी में अनुवाद किया। उन्हें गिजुभाई की लम्बी कहानी 'मेरी गाय' के हिन्दी अनुवाद पर नेशनल बुक ट्रस्ट का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला था। इस कहानी का एक अंश चकमक के नवम्बर, 1991 अंक में प्रकाशित हुआ है।

सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में गांधी जी के दर्शन को फैलाने में उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे वर्षों तक गांधी स्मारक निधि, म.प्र. तथा सर्वोदय मण्डल के अध्यक्ष रहे। चार-पाँच साल तक उन्होंने पंच-सरपंचों के प्रशिक्षण का कार्य किया। 1975 में जब म.प्र. के मुरैना - भिण्ड ज़िलों के बागियों ने आत्म-समर्पण किया तो वे ग्वालियर जेल में इन बागियों के साथ रहे। विनोबा भावे के ग्रामदान आन्दोलन के तहत टीकमगढ़ ज़िले में साल भर तक सघन काम किया। भोपाल में गांधी भवन न्यास की स्थापना की और अन्त तक उसके

अध्यक्ष रहे। नर्मदा बचाओ आन्दोलन समिति के वे अध्यक्ष रहे। समाज में रचनात्मक कार्यों के लिए उन्हें वर्ष 1995 का जमनालाल बजाज पुरस्कार दिया गया था।

काशिनाथ जी ने सन् 87 में भोपाल में कहीं चकमक का एक अंक देखा। इस अंक को देखकर उन्होंने पत्र लिखा और इच्छा ज़ाहिर की कि वे अंक ख़रीदना चाहते हैं। इसके बाद तो वे अन्त तक चकमक के पाठक रहे।

काशिनाथ जी की ही प्रेरणा से चकमक में 'गिजुभाई की कलम से' स्तम्भ शुरू हुआ। 1988-89 के कई अंकों में इस स्तम्भ में काशिनाथ जी द्वारा अनुवाद की गई गिजुभाई की कई रचनाएँ पहली बार हिन्दी में प्रकाशित हुईं।

चकमक में छपने वाली उनकी रचनाओं को लेकर वे लगातार पत्र व्यवहार करते रहते थे। छोटे से पोस्टकार्ड में वे लेख की साज-सज्जा की समीक्षा, प्रूफ़ की ग़लतियाँ और आगे के लिए सुझाव सब कुछ लिख देते थे। भाषा की शुद्धता के प्रति वे बहुत सतर्क रहते थे। पत्र का जवाब भी उन्हें उसी तत्परता से चाहिए होता था, जिस तत्परता से वे उत्तर लिखते थे। चकमक को लिखे गए उनके पत्र आज भी प्रेरणा स्रोत हैं।

काशिनाथ जी अब हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन उनकी ऐसी न जाने कितनी यादें यहाँ-वहाँ लोगों ने संजो रखी होंगी। वे अपने समय के प्रतीक थे - ऐसे काशिनाथ जी को चकमक की सादर श्रद्धांजलि।

❑ **राजेश उत्साही**

फोटो सौजन्य : अनिल त्रिवेदी

माथापच्ची : हल जुलाई, 96 अंक के

1. गुड़िया ने पन्द्रह में से ग्यारह सवालों के हल सही ढूँढे थे, पर चार हल ग़लत थे। ग्यारह सही सवालों पर उसे मिले 1 रुपए 10 पैसे जबकि चार ग़लत हल के लिए 1 रुपया कट गया। बचे सिर्फ़ 10 पैसे।

3. 'सबकुछ' में से 'सब' हटा दो तो बचता है 'कुछ'!

4.

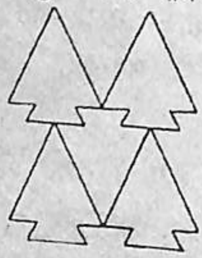

5. सागर

6. एक छड़ को मेज़ पर या ज़मीन पर रखकर दूसरी के एक सिरे को पहली की लम्बी सतह पर फिराओ। अगर रखी हुई छड़ (अ) की पूरी सतह दूसरी छड़ (ब) को अपनी ओर आकर्षित करती हो तो 'अ' लोहे की होगी। अगर वह सिर्फ़ दोनों सिरों पर 'ब' छड़ को आकर्षित करती है, बीच में नहीं तो वह चुम्बक है और 'ब' लोहे की छड़ है।

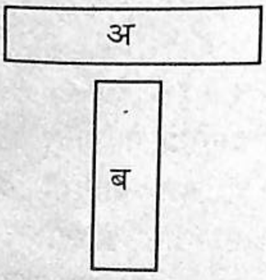

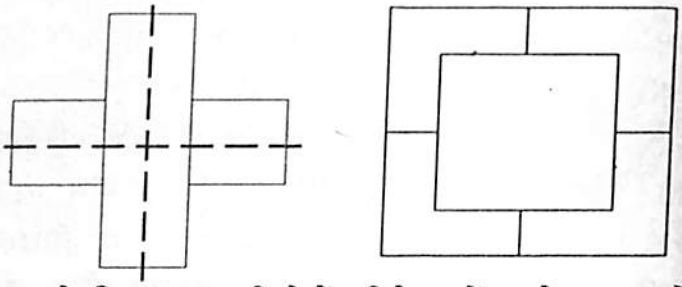

7. धन के निशान पर बनी दोनों टूटी रेखाओं पर से कट लगाने से चार टुकड़े मिलेंगे। इन्हें घुमाकर जमाने से दो वर्ग बन जाएँगे।

वर्ग पहेली - 59 का हल

1 अ	2 मृ	त	■	3 ख	जू	4 र	■	5 आ
■	दं	■	6 आ	टो	■	7 म	ल्ला	ह
8 आ	ग	9 ब	बू	ला	10 हो	ना	■	न
गा	■	ना	■	■	रि	■	11 दा	■
12 ह	13 जा	म	14 त	■	15 ल	16 क	द	17 क
■	ल	■	रै	■	■	ता	■	द
18 घों	■	19 मा	या	20 मि	21 ली	न	22 रा	म
23 स	ला	ह	■	24 ता	क	■	व	■
ला	■	25 त	स्की	न	■	26 शी	त	ल

वर्ग पहेली - 59 का कोई भी सर्वशुद्ध हल हमें नहीं मिला है।

क़िस्सा - बुरातीनो का

अब तक तुमने पढ़ा : जूज़ेप नाम के एक बढ़ई को बोलने वाला लकड़ी का कुन्दा मिला। जूज़ेप ने वह कुन्दा अपने दोस्त कार्लो को भेंट कर दिया। कार्लो ने कुन्दे को तराशकर कठपुतला बनाया। उसका नाम रखा बुरातीनो।

बुरातीनो बहुत शरारती था। उसकी कोठरी में एक झींगुर था, उसने बुरातीनो को सलाह दी कि उसे शरारत करना छोड़कर स्कूल जाना चाहिए। पर बुरातीनो ने हथौड़े से झींगुर की पिटाई कर दी। फिर उसकी मुलाक़ात एक नन्हे चूज़े और एक भयानक चूहे से हुई।

फिर बुरातीनो ने पापा कार्लो से कहा कि वह भी स्कूल जाएगा। कार्लो ने खुशी-खुशी बुरातीनो को स्कूल भेजने की तैयारी की। अब आगे पढ़ो...

बुरातीनो ने ककहरा बेचकर, तमाशे का टिकट ख़रीदा

सुबह तड़के बुरातीनो ने ककहरा बस्ते में रखा और उछलते-कूदते स्कूल की तरफ़ दौड़ चला।

रास्ते में उसने दुकानों पर सजी मिठाइयों पर भी नज़र नहीं डाली - शहदवाले बिस्कुट, मीठे केक, सींकों में लगा मुर्गोंवाला लेमनचूस।

उसने उन लड़कों को भी देखना नहीं चाहा जो पतंग उड़ा रहे थे...।

धारीदार बिल्ला बज़ीलिओ सड़क पार कर रहा था, कम से कम उसकी दुम तो पकड़कर खींची ही जा सकती थी। यहाँ भी वह ख़ुद पर काबू किए रहा।

ज्यों-ज्यों वह स्कूल के पास पहुँच रहा था, त्यों-त्यों उसे थोड़ी ही दूर पर भूमध्यसागर की ओर से गूँजता कर्णप्रिय संगीत अधिक स्पष्ट सुनाई दे रहा था।

पी-पी-पी - बाँसुरी की धुन सुनाई दी।

ला-ला-ला - वायलिन बज रहा था।

झिन्न-झिन्न-झिन्न - कंसताल झनझना उठा।

ढम्म-ढम्म - ढोलक पर थाप पड़ रही थी।

स्कूल के लिए दाहिनी तरफ़ मुड़ना था, संगीत की लहर बाईं ओर से गूँज रही थी! बुरातीनो के क़दम डगमगाने लगे। उसके क़दम ख़ुद-ब-ख़ुद सागर की ओर बढ़ लिए, जहाँ मधुर संगीत गूँज रहा था।

पी-पी-पी.... झिन्न-ला-ला, झिन्न-ला-ला... ढम्म!

"स्कूल कहीं चला तो नहीं जाएगा," बुरातीनो ज़ोर से बोला, "बस, एक बार इधर झाँक लेता हूँ, थोड़ा संगीत सुन लूँ, दौड़कर स्कूल तो पहुँच ही जाऊँगा।"

मन में आया और वह सागर तट की ओर दौड़ गया। उसने एक तम्बू देखा जो रंग-बिरंगी झण्डियों से सजाया गया था। ये झण्डियाँ समुद्री हवा के झोंकों से फड़फड़ाते हुए फहरा रही थीं।

तम्बू के छज्जे पर चार संगीतकार अपने-अपने बाजों को बजाते हुए थिरक रहे थे।

नीचे एक मोटी-सी आण्टी मुस्कराते हुए टिकटें बेच रही थी।

तम्बू के द्वार पर ख़ासी भीड़ जमा थी।

लड़के, लड़कियाँ, सैनिक, लेमनेड बेचनेवाले, बच्चों को गोद में सम्भाले धायाएँ, दमकलवाले, डाकिये - ये सभी बड़ा-सा पोस्टर पढ़ने में जुटे हुए थे।

बुरातीनो ने एक लड़के की बाँह पकड़ी, "भैय्या, ज़रा बतलाना तो टिकट कितने का है?"

लड़के ने लापरवाही दिखाते हुए धीरे-धीरे कहा, "चार सोल्दो का, लकड़ी के लड़के।"

"सुनिए, मैं अपना बटुआ घर पर ही भूल आया ... आप मुझे चार सोल्दो उधार नहीं दे सकते?"

लड़के ने सीटी बजाई, "मुझे क्या मूरख समझ लिया है तूने!"

"तमाशा देखने का बड़ा जी कर रहा है!" बुरातीनो की आँखों में आँसू डबडबा आए। "चार सोल्दो में मेरी ख़ूबसूरत जैकेट ले लीजिए ...।"

"काग़ज़ की जैकेट के चार सोल्दो कौन देगा? जा, किसी और को बेवकूफ़ बना!"

"तब फिर मेरी अच्छी सी टोपी ही ... !"

"तेरी टोपी से सिर्फ़ कीड़े-मकोड़े ही पकड़े जा सकते हैं ... जा, किसी और को बेवकूफ़ बना!"

बुरातीनो की नाक तक सुन्न हो गई - इतना उतावला हो उठा था वह तमाशा देखने के लिए।

"भैय्या, तब फिर चार सोल्दो में मेरा ककहरा ही ख़रीद लो ....!"

"चित्रों वाला है?"

"बढ़िया चित्रों से भरपूर, बड़े-बड़े अक्षरों वाला है।"

"चलो, दे दो," लड़के ने किताब हाथ में ली और मन मारकर चार सोल्दो गिनकर दे दिए।

बुरातीनो खिले चेहरे वाली आण्टी के पास आकर मिनमिनाया, "सुनिए, मुझे कठपुतली थियेटर का एक टिकट दे दीजिए - हाँ, पहली लाइन का!"

कठपुतलियों ने बुरातीनो को पहचाना

बुरातीनो पहली लाइन में जाकर बैठ गया और बड़ी उमंग से परदे को देखने लगा। परदे पर तरह-तरह के रोचक चित्र बने हुए थे - थिरकती मानव आकृतियाँ, काले नक़ाब वाली लड़कियाँ, सितारेदार टोपियाँ लगाए लम्बी-लम्बी दाढ़ी वाले डरावने चेहरे, गोल-गोल पूए जैसा सूरज, जिसकी नाक और आँखें भी थीं। इसी तरह के और भी मनोरंजक चित्र दिखलाई पड़ रहे थे। तीन बार घण्टी घनघनाई और परदा उठ गया।

छोटे से रंगमंच पर दाईं और बाईं तरफ़ दफ़्ती के पेड़ खड़े थे। उनके ठीक ऊपर चन्द्रमा के आकार वाला कंदील चमक रहा था जिसका प्रतिबिम्ब एक शीशे पर पड़ रहा था, शीशे की सतह पर रूई के बने सुनहरे चोंचवाले राजहंसों का जोड़ा तैर रहा था।

दफ़्ती के पेड़ के पीछे से एक नन्हा-सा आदमी निकला। वह लम्बी सफ़ेद कमीज़ पहने हुए था जिसकी बाँहें भी लम्बी-लम्बी थीं। उसके चेहरे पर सफ़ेद पाउडर पुता हुआ था।

उसने दर्शकों के सामने आदर से झुकते हुए उदास स्वर में कहा, "नमस्ते, मेरा नाम है पियेरो ... अब आपके सामने हँसी-मज़ाक़ से भरपूर नाटक शुरू होने जा रहा है, जिसका नाम है - 'नीलकेशिनी या तैंतीस झापड़'। मेरी छड़ी से ख़बर ली जाएगी, थप्पड़ों की सौगात दी जाएगी और गर्दन पर चपतें लगाई जाएगी। यह नाटक हँसी के गोलगप्पों से भरपूर है ...।"

दफ़्ती के दूसरे पेड़ की तरफ़ से एक और आदमी कूदकर सामने आया। वह ऊपर से नीचे तक चारखानेदार पोशाक में दिखलाई पड़ रहा था, जैसे वह आदमी नहीं शतरंज की बिसात हो।

वह दर्शकों के समक्ष सम्मान से झुका और बोला, "नमस्ते, मुझे आर्लेकिन कहते हैं!"

इसके बाद वह पियेरो की तरफ घूम गया और उसने इतनी ज़ोर से उसे दो थप्पड़ जड़े कि उसके गालों पर पुता पाउडर तक झड़ गया।

"तू क्यों ठिनक रहा है, मूरख?"

"मैं उदास हूँ क्योंकि मैं शादी करना चाहता हूँ," पियेरो ने जवाब दिया।

"करना चाहता है तो की क्यों नहीं?"

"इसलिए कि मेरी मंगेतर ही भाग गई।"

"हा-हा-हा," आर्लेकिन ने ठहाका मारा, "देखा इस मूरख को!"

उसने एक छड़ी उठाई और पियेरो को दो-चार हाथ जड़ दिए।

"तेरी मंगेतर का नाम क्या है?"

"तुम लड़ोगे तो नहीं?"

"क्या कहते हो, अभी तो मैंने शुरूआत ही की है।"

"अगर ऐसी ही बात है तो बताए देता हूँ। उसका नाम है मलवीना या नीलकेशिनी।"

"हा-हा-हा!" आर्लेकिन ने फिर से ठहाका लगाया और पियेरो की गर्दन पर तीन चपतें जड़ बैठा। "सुना आपने, आदरणीय सज्जनो? कहीं नीलकेशिनी भी होती है?"

वह दर्शकों की तरफ मुड़ा ही था, कि अचानक उसकी नज़र पहली लाइन में बैठे लकड़ी के लड़के पर पड़ी। उसका मुँह कानों तक फैला हुआ था, नाक बेहद लम्बी थी और वह सिर पर फुन्दनेदार टोपी पहने था।

"अरे, देखो-देखो, यह तो बुरातीनो है!" उसकी तरफ उंगली दिखाते हुए आर्लेकिन ज़ोर से चिल्लाया।

"सचमुच का बुरातीनो!" पियेरो भी हाथ हिलाता हुआ ज़ोर-ज़ोर से चीखने लगा।

दफ़्ती के पेड़ों के पीछे से बहुत-सी कठपुतलियाँ बाहर निकल आईं। उनमें काले नकाब लगाए लड़कियाँ, टोपियाँ लगाए डरावने दढ़ियल, झबरीले कुत्ते, जिनकी आँखों की जगह पर बटन जड़े हुए थे और ककड़ी जैसी नाकवाले कुबड़े भी शामिल थे।

वे सब मंच के सिरे पर लगी रोशनियों के

पास दौड़ आए और घूर-घूरकर देखते हुए चिल्लाने लगे, "यह तो बुरातीनो है! बुरातीनो! ऐ, इधर, हमारे पास आ जा, इधर आ, खुशदिल नन्हे शैतान!"

इस पर बुरातीनो अपनी जगह से कूदकर रंगमंच पर पहुँच गया।

कठपुतलों और कठपुतलियों ने उसे पकड़ लिया। उसे गले लगाने लगे, चूमने लगे, चुटकियाँ लेने लगे। फिर सबने मिलकर गीत गाना शुरू कर दिया :

चिड़िया नाची रे ता थैया,
उपवन में ख़ूब सबेरे।
कभी चोंच घुमाए, बाएँ,
कभी दुम झटकाए दाएँ
कारावास की ताल पे नाचे,
चिड़िया ता ता थैया।

दो गुबरैले ढोल बजाएँ,
बैण्ड बजाए नन्हकू मेंढक।
कभी चोंच घुमाए बाएँ,
कभी दुम झटकाए दाएँ।
कारावास की ताल पे नाचे,
चिड़िया ता ता थैया।

फुदक-फुदककर चिड़िया नाचे,
झूम-झूमकर ख़ुशी मनाए।
कभी चोंच घुमाए बाएँ,
कभी दुम झटकाए दाएँ।
कारावास की ताल पे नाचे,
चिड़िया ता ता थैया।

मिलन का यह दृश्य दर्शकों के हृदयों को छू गया। एक धाय तो आँसू बहाने लगी। एक दमकलवाला सुबकियाँ लेकर रोने लगा।

लेकिन सबसे पीछे की सीटों पर बैठे छोकरे गुस्से से पैर पटक रहे थे, "बन्द करो यह बचकानी चूमा-चाटी! खेल शुरू करो!"

यह सब हंगामा सुनकर मंच के पीछे से एक आदमी ने सिर बाहर निकाला। इतना ख़ौफ़नाक था वह कि उस पर नज़र पड़ते ही होश-हवास गुम हो जाएँ।

उसकी बिखरी हुई घनी दाढ़ी ज़मीन तक लहरा रही थी, गोल-गोल आँखें गुस्से से तरेर रही थीं, बड़े से मुँह के भीतर दाँत किटकिटा रहे थे, जैसे आदमी नहीं, कोई घड़ियाल हो। उसके हाथ में साँप की लपलपाती जीभों-सा सात जीभोंवाला हंटर था, जिसे वह सतमुँहा हंटर कहता था।

यह व्यक्ति, कठपुतली थियेटर का मालिक, कठपुतली विज्ञान का डाक्टर काराबास बाराबास था।

"हो-हो-हो, हू-हू-हू!" वह बुरातीनो पर गरजा। "तो तुम मेरे इस सुन्दर नाटक में ख़लल डाल रहे हो?"

उसने बुरातीनो को दबोचा, रंगशाला के गोदाम में ले गया और उसे खूंटी से टाँग दिया। उसने वापस लौटकर अपने सतमुँहे हंटर से कठपुतलियों को धमकाया कि वे खेल जारी रखें।

कठपुतलियों ने किसी तरह नाटक ख़त्म किया, पर्दा गिरा, दर्शक अपने-अपने घर चल दिए।

काराबास बाराबास रसोईघर में रात का खाना खाने गया।

दाढ़ी का निचला हिस्सा जेब में खोंसते हुए, ताकि वह अड़चन न डाले, वह अलाव के पास बैठ गया, जिसमें लोहे की सलाख पर एक खरगोश और दो चूज़े भुन रहे थे।

उंगलियों को जीभ से तर करके उसने भुनते हुए गोश्त को छूकर देखा, उसे लगा कि अभी पकने में कसर बाक़ी है।

अलाव में लकड़ी कम थी। तब उसने तीन बार ताली बजाई। आर्लेकिन और पियेरो दौड़कर आए।

"ज़रा उस निठल्ले बुरातीनो को मेरे पास लाओ तो," काराबास बाराबास ने कहा। "वह सूखी लकड़ी का बना है, उसे मैं आग में झोंक दूँगा। तब खाना ज़रा कायदे से पक जाएगा।"

आर्लेकिन और पियेरो घुटनों पर गिरकर बुरातीनो के लिए दया की भीख माँगने लगे।

"कहाँ है मेरा सतमुँहा हंटर?" काराबास बाराबास चीखा।

तब दोनों रोते-रोते गोदाम में गए, उन्होंने खूंटी से बुरातीनो को उतारा और उसे रसोईघर में ले आए।

(अगले अंक में जारी)

('सोने की चाबी - क़िस्सा बुरातीनो का' से साभार।
लेखक : असलेक्सेई तोलस्तोय,
सभी चित्र : अलेक्सान्द्र कोश्किन)

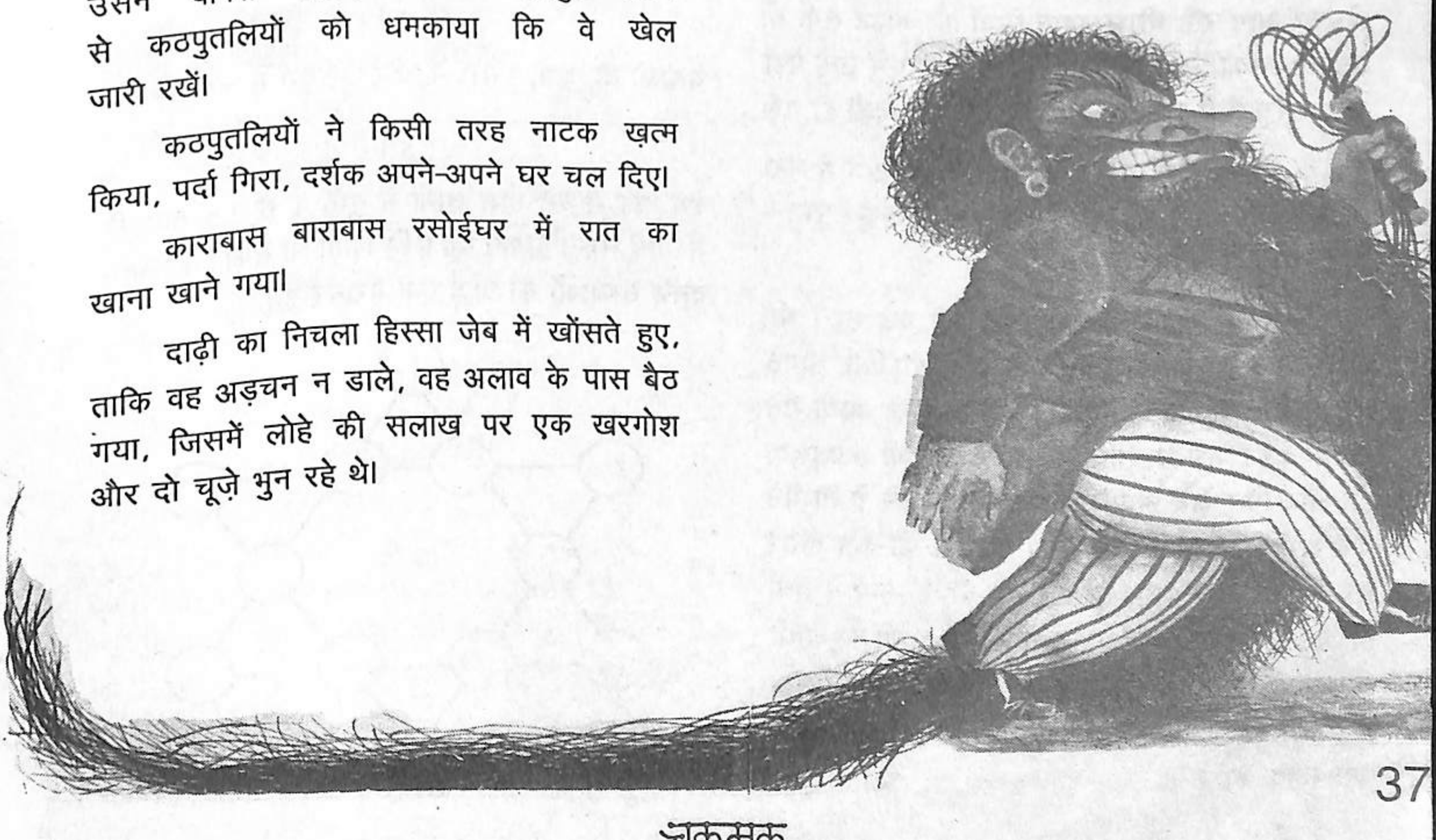

माथापच्ची

(1)

यह गत्ता एक घनाकार डिब्बा बनाने के लिए काटकर रखा गया है। अगर काले चौखाने को आधार मानकर डिब्बा बनाएँ तो इस पर बने तीर कहाँ और किस दिशा में आएँगे? ज़रा साथ में बने घनाकार डिब्बे पर दिखाओ।

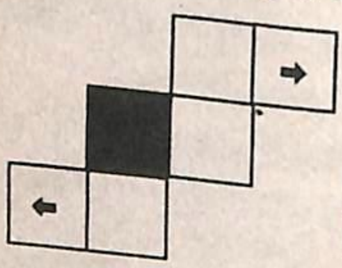

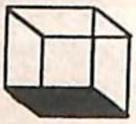

(2)

बिल्लो चुपके से रमज़ान मियाँ के बाग से कच्ची अम्बियाँ तोड़कर भाग रही थी। रमज़ान मियाँ को आहट लगी तो उन्होंने उसका पीछा किया। पहले तो बिल्लो ने उन्हें पेड़ों और झुरमुटों में बहुत छकाया पर आख़िर पकड़ी ही गई।

रमज़ान मियाँ ने देखा तो बिल्लो के हाथ में ज़रा सी अम्बियाँ बाक़ी थीं। उन्होंने उससे कड़कते हुए पूछा - "तूने तोड़ी कितनी कैरियाँ थीं?"

बिल्लो बोली, "चच्चा तोड़ी तो कई सारी थीं। आधी तो मैंने पहले ही सलमा को दे दी थीं। फिर भागते हुए दो मैंने खा लीं। फिर जितनी बचीं उनकी आधी मैंने मेड़ के बाहर फेंक दी। शायद सलमा ने उन्हें भी उठा लिया हो। और फिर जब आप मुझे पकड़ने ही वाले थे तो मैंने एक अम्बी उस भूरी बिल्ली को दे मारी जो कल हमारे घर से दूध की पतीली चट कर गई थी। तो अब ये बची हैं। जितनी मैंने तोड़ी थीं चच्चा, ये उसकी आधी की आधी की भी आधी हैं। अब तुम ही बताओ मैंने कितनी अम्बियाँ तोड़ी थीं।" रमज़ान मियाँ तो पड़ गए चक्कर में। तुम उनकी कुछ मदद करोगे?

(3)

मेरे घर में सि.र्फ एक ही घड़ी है, मेरे दादाजी के समय की दीवार घड़ी। एक दिन मैं उसकी चाबी भरना भूल गया और वह बन्द पड़ गई। तब मैं पड़ोस में रहने वाले एक मित्र के घर गया, उसके घर कुछ देर बैठा, चाय पी और वापस चला आया। हाँ, एक ज़रूरी बात यह कि मेरे इस अज़ीज़ दोस्त की घड़ी हमेशा सही समय बताती है। तो उसके घर जाकर मैंने उसकी घड़ी देख ली थी। सो घर लौटकर मैंने अपनी घड़ी के काँटे घुमाकर सही जगह फिट कर दिए।

मगर मेरे पास यह बताने के लिए तो कोई घड़ी थी ही नहीं कि मुझे दोस्त के घर आने-जाने में कितना समय लगा। लेकिन मैंने कुछ तो जुगत भिड़ाई और कुछ माथापच्ची की थी। क्या किया था मैंने?

(4)

बताओ तो ज़रा, 100 में और 1000 में क्या फ़र्क़ है?

(5)

इस तारे में बने गोल खानों में तुम्हें 1 से 14 तक की संख्याएँ भरनी हैं। शर्त यह है कि किसी भी लकीर पर आने वाली संख्याओं का जोड़ एक बराबर हो।

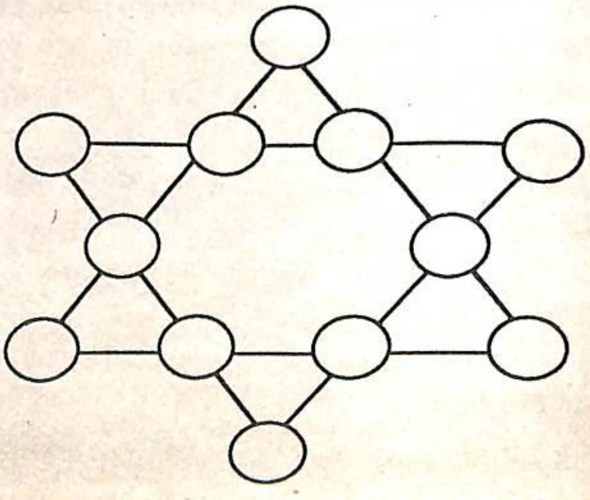

(6)

तुमने कभी न कभी शतरंज का खेल तो खेला होगा। ख़ुद न भी खेला हो तो किसी दूसरे को खेलते तो देखा होगा। जानते हो शतरंज की बिसात में कितने सफ़ेद-काले खाने होते हैं? पूरे चौंसठ। अब ज़रा यह बताओ कि शतरंज की बिसात में छोटे बड़े मिलाकर कुल कितने वर्ग होते हैं? चौंसठ नहीं इससे कहीं ज़्यादा। गिनकर बताओ।

(7)

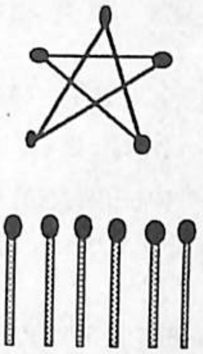

यह है पाँच माचिस की तीलियों को इस तरह जमाने का तरीक़ा कि पाँचों -पाँच एक-दूसरे को छूती रहें। अब क्या तुम छह तीलियों को भी इसी तरह जमाने का तरीक़ा ढूँढ सकते हो। मामला बहुत आसान नहीं हैं पर कोशिश कर देखो।

वर्ग पहेली : 62

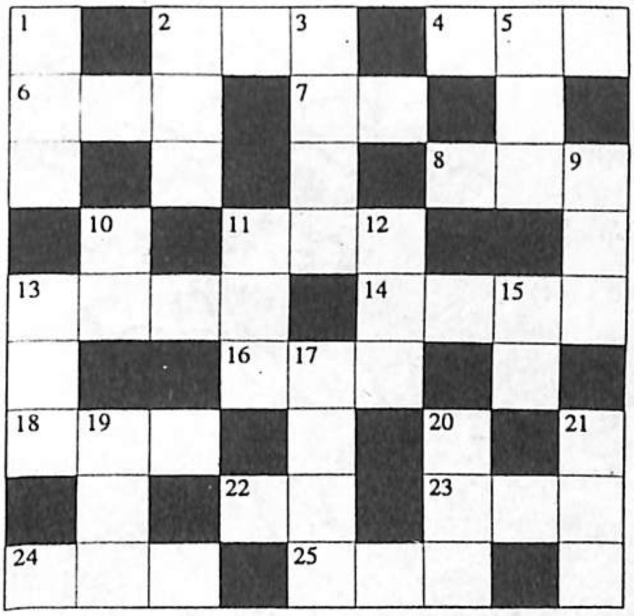

संकेत : बाएँ से दाएँ

2. भोला-भाला (3)
4. एक घण्टे का साठवाँ हिस्सा (3)
6. अजी वन में क्या करोगे? जिएँगे! (3)
7. शैली या ढंग (2)
8. हम टका देंगे तो घड़ा मिलेगा (3)
11. शक्तिशाली सक्षम औरत (3)
13. उल्टे मानव में आधी लाली, जंगल का रक्षक (4)
14. किसी बात को बढ़ावा देना, एक मुहावरा (2,2)
16. सबर की उलटफेर में ही गुज़ारा है (3)
18. आधे लाल साफा में ढूँढो एक लाल-काले रंग का पहाड़ी फल (3)
22. धूप (2)
23. नरेश की एकमात्र मात्रा बदलकर उलट-पलटकर देखो तो अँधेरा दूर हो जाएगा (3)
24. इच्छा (3)
25. उल्टे मीत में अदब से जोड़ो ज़र (3)

संकेत : ऊपर से नीचे

1. अजी बस करो, विचित्र है (3)
2. अवमानना में तुम भी हो, हम भी हैं (3)
3. कीमत लब पर न लाओ, सिर्फ़ अर्थ ढूँढो (4)
5. तनिक टरटराना बन्द करके पास आओ (3)
9. मंत्रीमण्डल (3)
10. गाँधी जी के बन्दर .... (2)
11. सूली (3)
12. महाराष्ट्र का वह शहर जिसमें दो साल पहले एक बड़ा भूकम्प आया था (3)
13. छात्रों को दी जाने वाली सहायता (3)
15. यहाँ .... है, अन्धेर नहीं (2)
17. दुस्सह मतलब में राज़ी (4)
19. लालच रहेगा तो दृढ़ कैसे होगा? लचीला ही होगा (3)
20. जो मुबारक भी हो और क़ामयाब भी (3)
21. अशोक का सिर, मेनका का धड़ और सुनील की पूँछ को जोड़ो (3)

● मेघसिंह राठौर, नौलासियाँ, नागौर, राजस्थान द्वारा बनाई गई वर्ग पहेली पर आधारित

सर्वशुद्ध हल भेजने वालों को चकमक तीन माह तक उपहार में भेजी जाएगी। हल के लिए वर्ग पहेली की जाली को चकमक से काटकर न भेजें, बल्कि उसमें जो शब्द आने वाले हों उन्हें संकेत के ही नम्बर देकर लिख दें। वर्ग पहेली-62 का हल नवम्बर, 1996 के अंक में देखें।

एक पहेली

बूझ न पाई एक पहेली,
बैठ गई मैं हार मानकर,

माँ कहती, जब मैं जनमी तो,
चुहिया जैसी थी छोटी-सी;
उसने मुझको दूध पिलाकर
बड़ी बनाया बिल्ली जैसी,

समझ न आता फिर वह अब क्यों
डाँट लगाती बात-बात पर?

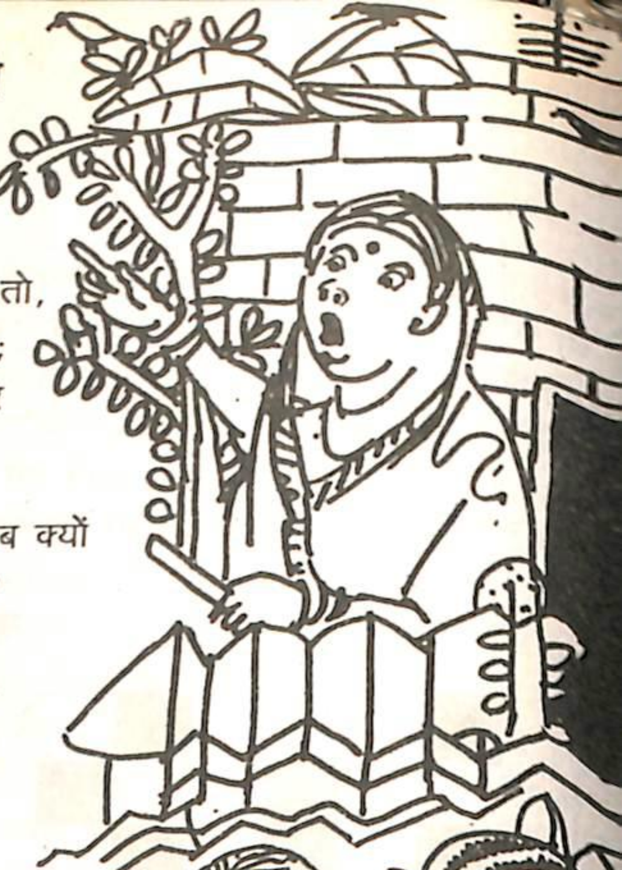

माँ भी तो थी चुहिया जैसी,
नानी ने यह मुझे बताया;
उसने भी तो दूध पिलाकर
मेरी माँ को बड़ी बनाया,

लेकिन नानी उसे कभी भी
नहीं डाँटती किसी बात पर!

क्यों होता है ऐसा, इसका
कारण मैं कुछ जान न पाई;
पर नाना जी ने पल भर में
मेरी यह उलझन सुलझाई

'माँ तब नानी बनती है जब
थक जाती है डाँट-डाँटकर!'

❑ भुवनेश कुमार

चित्र ❑ शोभा घारे

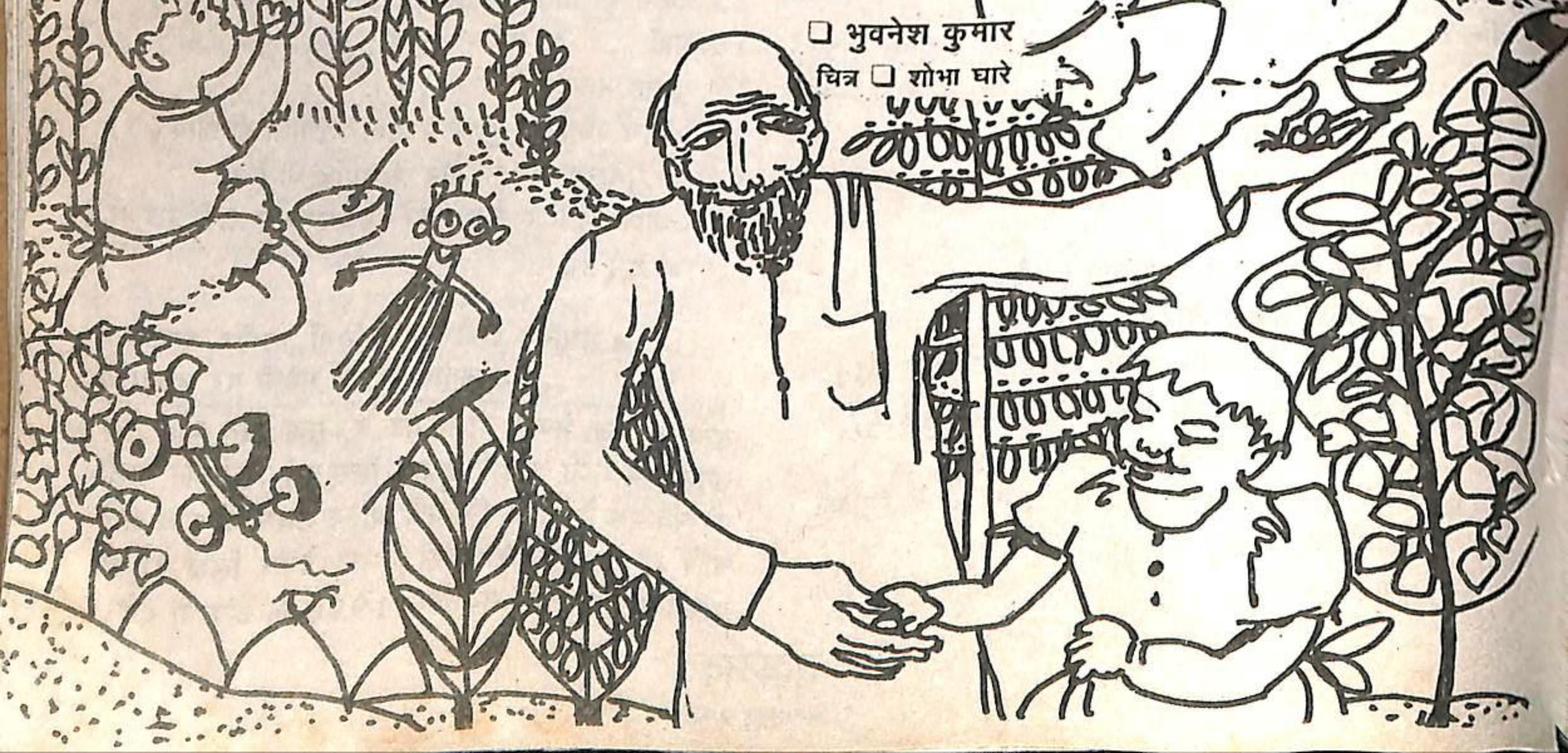

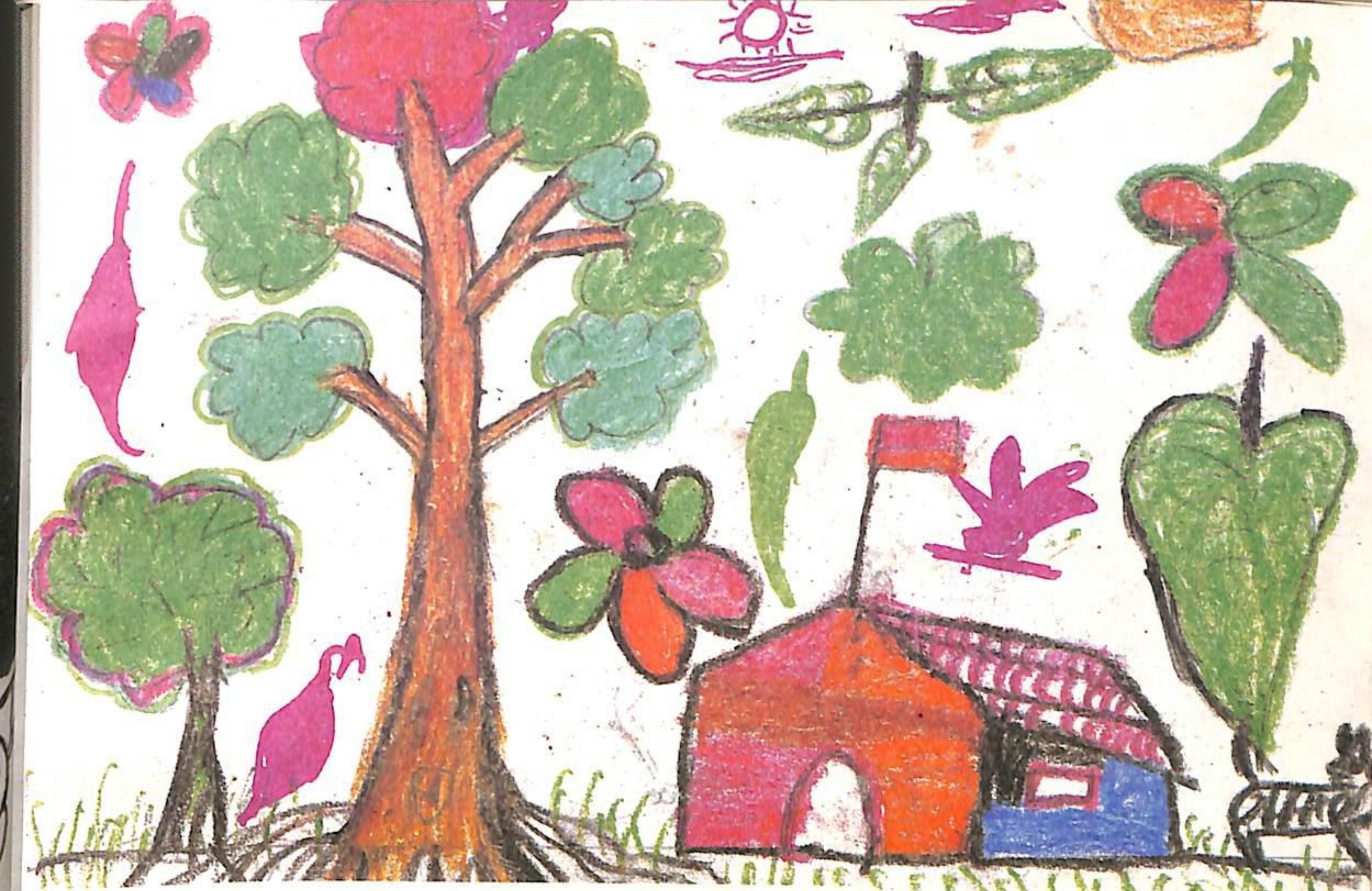

वनसिंग सापला बड़वी, तीसरी, चिमलखेड़ी, महाराष्ट्र

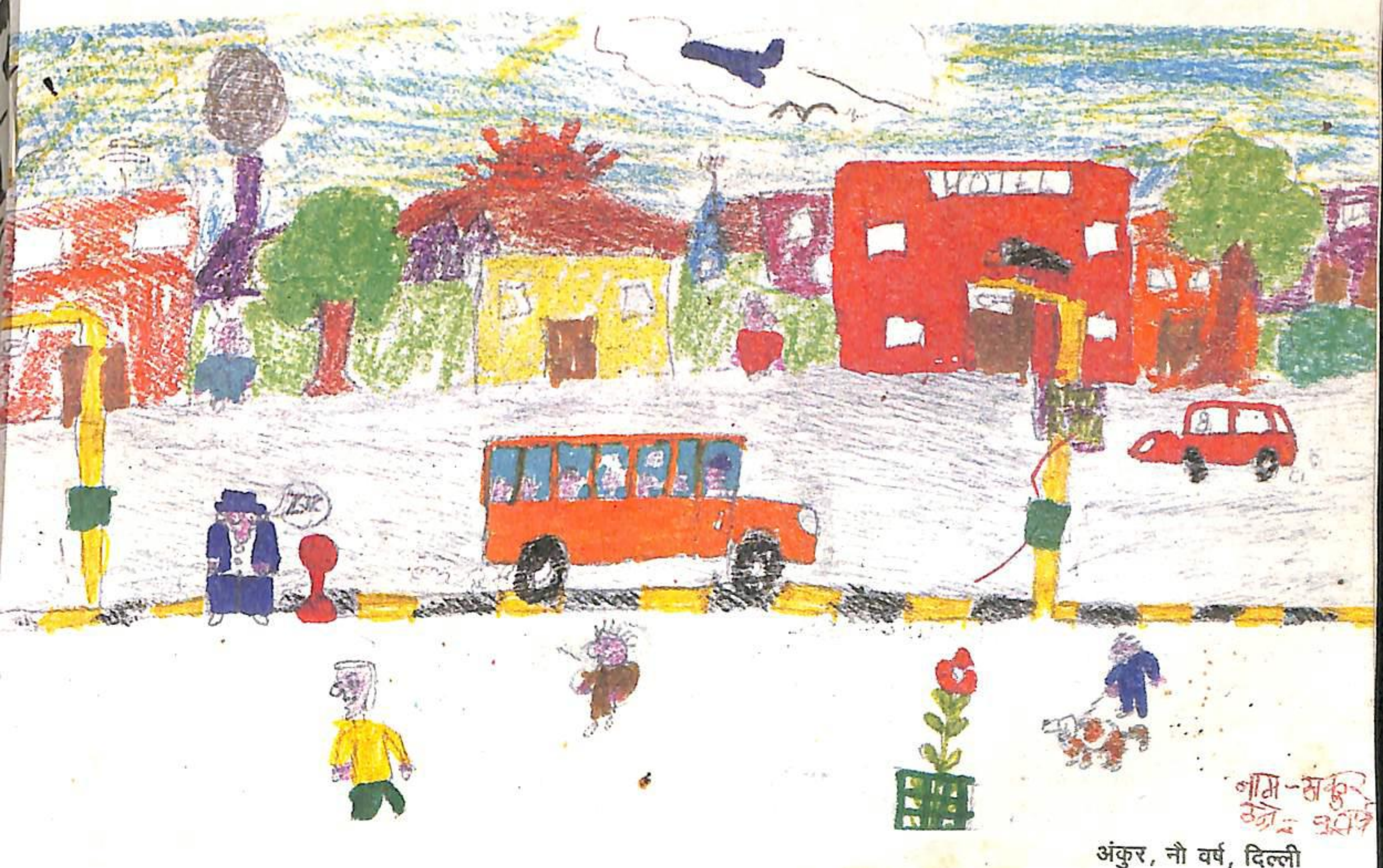

अंकुर, नौ वर्ष, दिल्ली

 पंजीयन क्रमांक 50309/85 के अंतर्गत भारत के समाचार पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्रमांक BPL/DN/MP/431/96

प्रतिश्रुति जैन, चार वर्ष, उज्जैन, म.प्र.

रेक्स डी रोज़ारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा राजकमल ऑफसेट प्रिन्टर्स, भोपाल से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-1/25, अरेरा कालोनी, भोपाल- 462 016 से प्रकाशित।
संपादक : विनोद रायना